(मासिक)

# ज्ञानामृत

वर्ष 56, अंक 1, जुलाई, 2020
मूल्य 10.00 रुपये, वार्षिक शुल्क 120

## परमात्मा और श्रेष्ठ कर्मों को अपना साथी बना लो तो जीवन खुशियों से भर जायेगा ...

**बिदर (पावन धाम)-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए दो लाख रुपये का चेक जिलाधीश भ्राता एच.आर. महादेव को सौंपते हुए ब्र.कु. प्रतिमा बहन।

**इंफाल-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए दो लाख रुपये का चेक मणिपुर के मुख्यमंत्री भ्राता एन. बीरेन सिंह को सौंपते हुए ब्र.कु. नीलिमा बहन।

**अगरतल्ला-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए त्रिपुरा के उपमुख्यमंत्री भ्राता जे. डेबरमन को एक लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. आद्या बहन।

**नीमच-** विधायक भ्राता दिलीप सिंह परिहार को प्रधानमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए एक लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. सविता बहन तथा ब्र.कु. सुरेंद्र भाई।

**सोलन-** कोरोना राहत कोष के लिए एक लाख, एक हजार रुपये का चेक उपायुक्त भ्राता के.सी. चमन को सौंपते हुए ब्र.कु. सुषमा बहन।

**डुंगरपुर-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए पचास हजार रुपये का सहयोग जिलाधीश भ्राता कानाराम को सौंपते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन।

**पठानकोट-** कोरोना राहत कोष के लिए एक लाख रुपये का चेक अतिरिक्त उपायुक्त भ्राता प्रीथी सिंह को सौंपते हुए ब्र.कु. प्रताप भाई।

**केंद्रापड़ा-** प्रधानमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए जिलापाल भ्राता समर्थ वर्मा को एक लाख रुपये का चेक सौंपते ब्र.कु. हुए स्नेहा बहन।

# शुभाशीष

परमकल्याणकारी परमपिता शिव की दिव्य वाणी को तथा आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा की नई सृष्टि रचना की श्रेष्ठ मत को लेख-कविताओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने वाली 'ज्ञानामृत' पत्रिका जन-सेवा के 55 वर्ष पूरे कर चुकी है।

आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण आज चारों तरफ घनघोर अंधेरा छाया है। ऐसे में बुराइयों के अंधकार को चीरते हुए ज्ञान-दीप की तरह यह ज्ञानामृत पत्रिका सबके दिलों में श्रेष्ठ विचारधाराओं का उजाला फैला रही है। मानव मात्र को कर्त्तव्यों के प्रति सजग कर, विकारों और विकृतियों पर विजयी बनने का बल प्रदान कर रही है।

ज्ञानामृत के लेखों में गम्भीर सामाजिक विश्लेषण के साथ-साथ रमणीकता का सुन्दर सन्तुलन है। साहित्यिक रस से ओत-प्रोत इस ज्ञान-प्याले को पाठक एक ही श्वास में पी जाता है और पुन:-पुन: पीने के लिए सहेज कर रखता है। समय के कठोर आघातों के बीच ज्ञानामृत रूहानी लोरी-सी प्रतीत होती है। यह अनिद्रा के रोगी को सुलाती है परन्तु अकर्मण्य और आलसी को झकझोर कर जगाती है और कर्त्तव्यबद्ध कर देती है।

हर वर्ग और हर व्यवसाय के पाठकों को उमंग-उत्साह के पंख लगाने वाली, उन्हें सद्विवेक रूपी तीसरा नेत्र प्रदान करने वाली, सात्विक मन-बहलाव द्वारा आनन्दित करने वाली इस पत्रिका को सभी राजयोगी भाई-बहनें; हर गाँव, शहर, गली, मोहल्ले तक पहुँचाने की सेवा अथक होकर करते रहते हैं और आगे भी करते रहेंगे, ऐसी मेरी शुभकामना है। जो भाई-बहनें उत्कृष्ट विचारों से सजे लेख लिखते हैं, जो इसे आकर्षक रूप प्रदान करते हैं, जो इसे जन-जन तक पहुँचाकर जनप्रिय बनाते हैं, जो इसका अध्ययन कर स्वयं का और दूसरों का ज्ञान-खजाना बढ़ाते हैं, उन सबको मैं कोटि-कोटि बधाई देती हूँ।

वर्ष 2020-2021 के लिए स्नेही पाठकगण के प्रति यही शुभकामना है कि अन्तर्मुखी बन निरन्तर सम्पूर्णता रूपी लक्ष्य पर एकाग्र रहें, आत्मावलोकन करते हुए स्व को निखारते रहें तथा एकान्तवासी होकर साधनारत रहते हुए भी एकता के सूत्र में पिरोए रहें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

**बी.के.रत्नमोहिनी**

## अमृत-सूची


- शुभाशीष 3
- राजयोग द्वारा सिद्धियों की प्राप्ति (सम्पादकीय) 4
- नर से नारायण बनाने आए (कविता) 7
- दीदी मनमोहिनी सबके दिलों पर राज करने वाली थी 8
- बहुत प्यार करते हैं बाबा को हम (कविता) 9
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- गुणग्राही दृष्टि 11
- मिलने आते हुजूर हैं (कविता) 13
- रूहानी प्यार 14
- दुआओं का बल 17
- धन के लिए नीति और रीति 18
- यौगिक खेती 19
- लॉकडॉउन - शरीर और मन का 20
- क्षमा-याचना से होगा इलाज संभव 21
- मिली ऊपर वाले की सही पहचान 23
- एक पत्र, पुत्र के नाम 26
- धैर्य का फल मीठा 27
- सचित्र सेवा-समाचार 28
- पिता के रिक्शा से आई.ए.एस. तक का सफर 30
- कोरोना वायरस से आध्यात्मिकता की ओर 32
- श्रद्धांजली 34

# राजयोग द्वारा सिद्धियों की प्राप्ति

ढाई अक्षरों का बना है 'योग' अक्षर परन्तु इसका सही अभ्यास करने से मनुष्य को ढाई हजार वर्षों के लिए सर्वांगीण, सम्पूर्ण और स्थाई सुख एवम् शान्ति की प्राप्ति होती है। यह कहना अयुक्त न होगा कि योग ही मात्र ऐसा पुरुषार्थ है जिस द्वारा मनुष्य को सर्व सिद्धियाँ और सर्व निधियाँ प्राप्त होती हैं। योग चाबियों का एक ऐसा गुच्छा है जिस द्वारा सभी खजानों के द्वार और सभी शक्तियों के भंडार मनुष्य के लिए सहज ही खुल जाते हैं। योग-स्थित आत्माओं के संकल्प बड़े शक्तिशाली, अचूक और कल्याणकारी होते हैं। उनके सामने प्रकृति की शक्तियाँ नतमस्तक होती हैं।

प्रश्न उठ सकता है कि योग द्वारा सब सिद्धियाँ कैसे प्राप्त होती हैं। इसको जानने के लिए यह मालूम होना चाहिए कि योग रूपी पुरुषार्थ में अनेक प्रकार के सूक्ष्म और स्थूल पुरुषार्थ समाये होते हैं और उनमें से हरेक पुरुषार्थ किसी-न-किसी प्रकार की सिद्धि को देने वाला होता है। यह प्राय: सर्वविदित है कि योगी को (1) सत्य (2) अहिंसा (3) ब्रह्मचर्य (4) अपरिग्रह अथवा अनासक्ति और (5) शुद्धि अथवा शुचि आदि का पालन करना पड़ता है। इनके अतिरिक्त वह देह से न्यारा होता है, परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ता है,मन को सब ओर से हटाकर, इस संसार से भी निकालकर एक परमात्मा ही पर टिकाता है तथा सबके कल्याण की बात सोचते हुए सेवा में रहता है। अब हम नीचे यह बतायेंगे कि किस पुरुषार्थ से क्या सिद्धि होती है –

### सत्य

जो बात अथवा वस्तु हो, उसके बारे में कहना कि वह 'है ही नहीं' अथवा जो गलती, भूल अथवा घटना हुई हो, उसके बारे में कहना कि वह 'हुई नहीं' असत्य है। इस प्रकार जो घटना न घटी हो अथवा जो बात या चीज हो ही न, उसके बारे में कहना कि 'वह है' यह भी असत्य है। इस प्रकार का असत्य कथन मनुष्य प्राय: भय अथवा स्वार्थ के वश ही किया करता है। अत: सत्य बोलने से मनुष्य को अभय एवं अचल अवस्था की तथा अपने वचन के सत्य की सिद्धि की प्राप्ति होती है अर्थात् उसके बोल वरदान रूप सिद्ध होते हैं। अत: जब हम पारमार्थिक और व्यवहारिक सत्य बोलते हैं तो हम 'वरदान मूर्त' बनते हैं। 'मैं आत्मा हूँ, देह नहीं; परमात्मा परमधाम का वासी है, सर्वव्यापक नहीं' – अध्यात्म सम्बन्धी ऐसे सत्य

बोलना पारमार्थिक सत्य कहलाता है और व्यवहार में जो बात जैसी हो, उसे निश्छल रूप से सरलतापूर्वक वैसे ही कहना व्यवहारिक सत्य है। इन दोनों प्रकार के सत्यों से मनुष्य की अवस्था सतोप्रधान होने लगती है, वह सत्य स्वरूप परमात्मा को अधिकाधिक निकटता से जानता है, वह सतयुग के देवताओं-तुल्य अवस्था प्राप्त करने लगता है और उसके वचन सत्य सिद्ध होने लगते हैं। आज इस कलिकाल में असत्यता का ही प्रचलन है; अत: सत्य बोलने वाले को बहुत कष्ट सहन करने पड़ते हैं, यहाँ तक कि उसका जीना ही मुश्किल हो जाता है। फिर, ऐसे भी अवसर आते हैं जब सत्य बोलने पर किसी दूसरे के परमार्थ में भी विघ्न पड़ सकता है, यहाँ तक कि किसी की जान भी जा सकती है। अत: कई बार सत्य के पथ पर जाने वाले के लिए संघर्ष उत्पन्न होता है। परन्तु मनुष्य को इस बात का सतत प्रयत्न करना चाहिए कि वह सत्य को ही ग्रहण करे, सत्यता ही को व्यवहार में लाये और जब तक कि किसी के पारमार्थिक कल्याण की अथवा किसी के जीवित रहने की विषम परिस्थिति उपस्थित न हो, सत्य ही बोले। इससे ही सत्य की प्रत्यक्षता होगी, सतयुग आएगा, सतोगुण प्रधान होगा और जो कहेंगे, वह हो जाएगा।

### अहिंसा

शत्रुता, घृणा, द्वेष, स्वार्थ और क्रोध के वशीभूत होकर किसी प्राणी के प्राण हरना अथवा किसी अन्य जीव का घात करना तथा स्वंय को या अन्य किसी को कष्ट, दुख एवं अशान्ति पहुँचाना न्यूनाधिक हिंसा करना है। अत: इनको छोड़कर प्रेम, स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति, सद्भावना, सह-अस्तित्व और सर्व-उत्कर्ष के भाव में जो स्थित होता है उसे भी इसके फलस्वरूप दूसरों का स्नेह, सद्भाव, सामीप्य, सद्भावना इत्यादि की प्राप्ति होती है। जो काम द्वारा कुठाराघात, क्रोध द्वारा दाह, लोभ द्वारा लूट आदि कर्मों में पड़कर दूसरे का अकल्याण करना छोड़ देता है, वही सबका स्नेहभागी बनता है, सबके मन को जीतता है अथवा उनकी इच्छा से उन पर शासन करता है। ऐसी अहिंसा के बल से ही सुख-शान्ति से पूर्ण, शत्रु रहित, आक्रमण रहित, दुखरहित स्वराज्य की प्राप्ति होती है। ऐसी अहिंसा से ही मनुष्य देवता बनता है, देवयुग की स्थापना के कार्य में सफल होता है और दैवी स्वराज्य का अधिकारी बनता है। इसी से ही सभी जीव-प्राणी उसे प्यार देने और उसका प्यार पाने को उत्सुक रहते हैं क्योंकि उसका प्यार नि:स्वार्थ और कल्याणमय होता है। हम मन, वचन, कर्म से जितना-जितना इस प्रकार की अहिंसा का पालन करेंगे, उतना-उतना हम मन-पसन्द और लोक-पसन्द बनेंगे और इसी के आधार पर हम भविष्य का अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करेंगे।

### ब्रह्मचर्य

शारीरिक सौन्दर्य के आकर्षण का, रूप और लावण्य का, कोमलता और कामुकता का दास न बनना ही ब्रह्मचर्य का पालन करना है। यौवन में भी, एक शिशु के समान मन के निर्दोष रहने और दृष्टि एवं वृत्ति के शुद्ध करने ही को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। गृहस्थ को भी जो आश्रम के समान बनाकर इस अपवित्र संसार रूपी कीचड़ में कमल के समान रहता है, वही ब्रह्मचारी है। जो अपने तथा अन्य किसी के देह

पर आसक्त नहीं है बल्कि स्वयं को ब्रह्मधाम से आया हुआ एक आत्मा मान कर सारी चर्या करता है, वही मानो ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है। इस प्रकार के आचरण से अपनी शक्ति का संचय करते हुए जो अपनी तथा अन्य आत्माओं की उन्नति में लगा रहता है, वह ही उत्तम ब्रह्मचारी है। मन में निर्दोष होने के कारण उसकी मासूमियत दूसरों को प्रभावित करती है। रूप, लावण्य के आकर्षण को जीतने के परिणाम-स्वरूप वह आत्मा स्वरूप में स्थित होता है, ईश्वरीय लव में लीन रहता है और ब्रह्मलोक से आया हुआ मानकर विचरने के प्रभाव स्वरूप लोगों को उसकी निकटता में ब्रह्मलोक की शान्ति, एकान्त और प्रकाश का अनुभव होता है। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के फलस्वरूप कर्मेन्द्रियाँ उसकी दासी हो जाती हैं और उसे स्थाई स्वास्थ्य तथा सात्विक सुख की प्राप्ति होती है। शक्ति का संगठन करने के कारण वह इतना शक्तिशाली हो जाता है कि मृत्यु को भी जीतकर अमर देवता बन जाता है। उसका शैशव और यौवन चिरस्थायी रहता है तथा उसे बुढ़ापा और व्याधि अपने अधीन नहीं कर सकते। अत: हमें मन, वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य का ही पालन करना चाहिए क्योंकि इस द्वारा ही सतयुगी दैवी सृष्टि की अथवा अमरलोक की एवं जीतेन्द्रिय देवताओं की रूप-लावण्य, स्वास्थ्य-सुख, सम्पदा और सदा बहार वाली दुनिया की स्थापना हो सकती है और हम उसमें जाने के अधिकारी बन सकते हैं। यहाँ ब्रह्मचर्य का पालन करने से ही हमारे लिए ब्रह्मलोक के द्वार खुल सकते हैं। इन्द्रियों को जीतने से अथवा इन्द्रियों से परे स्थिति होने से ही हम इन्द्रप्रस्थ के मालिक बन सकते हैं।

### अनासक्ति अथवा अपरिग्रह

किसी भी पदार्थ, वस्तु अथवा व्यक्ति में लगाव न होना, उस पर आश्रित अथवा आधारित न होना, उसके न होने पर आकुल-व्याकुल न होना तथा स्वप्न और स्मृति मात्र में भी उसके प्रति खिंचाव अथवा उसके लिए तृष्णा अनुभव न करना ही अनासक्ति है। ऐसी अनासक्ति वाला ही उपराम चित्त होता है। उसमें घृणा नहीं होती बल्कि समझ और सूझ के आधार पर उसमें ममत्व या आकुलता नहीं होती। इस प्रकार अनासक्त हो, इधर-उधर सब ओर से लगाव मिटाने वाले का मन ही, जहाँ वह लगाना चाहे, लग सकता है अर्थात् अनेक ओर से हटाने के कारण उसे एकाग्रता प्राप्त होती है। संसार के अस्थिर पदार्थों में आकुल न होने वाले को ही मन की स्थिरता और उच्च कुल मिलता है। आकर्षणों को जीतने से ही उसके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण आता है अर्थात् वह आकर्षणमूर्त बनता है। अनेक प्रकार के रसों की तृष्णा को जीतने से ही सब प्रकार के रसों की स्वत: ही प्राप्ति होती है और जीवन नीरस की बजाय सरस बनता है अर्थात् मनुष्य ईश्वरीय स्मृति द्वारा आनन्द रस प्राप्त करता है। मेरा-मेरा मिटाने से ही सब-कुछ मेरा हो जाता है और हर व्यक्ति मेरा ही बनना चाहता है। ममत्व को छोड़ने से ही सर्वस्व की प्राप्ति होती है। स्मृति द्वारा भी सब प्रकार की आसक्ति को भूलने से आत्मा की याद टिक सकती है। चीजों को छोड़ने से ही मन में हल्कापन और वृत्ति में विराम आता है। अत: हमें अनासक्ति और अपरिग्रह को पूर्ण रूप से धारण करना चाहिए क्योंकि यही प्रकृति को दासी बनाने का दिव्य उपाय है। अनासक्ति वाले को कुछ भी अप्राप्त नहीं रहता और वह अशान्ति, अकिंचन-भाव और अधीनता से ऊपर उठ जाता है। इस संसार के पदार्थों में अनासक्त होने वाले को सहज ही स्वर्ग की सर्व सम्पदा प्राप्त होती है और यहाँ भी सम्पत्ति और सिद्धि उसके अंग-संग रहना चाहती हैं।

### शौच अथवा शुद्धि

जल के स्नान द्वारा शरीर की, दैवी गुणों की धारणा द्वारा मन की, ज्ञान द्वारा बुद्धि की और योग द्वारा संस्कारों की शुद्धि होती है। सत्संग द्वारा विचार की और श्रेष्ठ लक्ष्य द्वारा मनुष्य के लक्षणों में शुचि आती है। तन की शुद्धि से तन्दुरुस्ती, मन की शुद्धि से मन-मौज, बुद्धि की शुद्धि से ध्रुव स्मृति और संस्कारों की शुद्धि से सात्विकता प्राप्त होती है। इन सबकी शुद्धि से अतीन्द्रिय सुख का अपार खजाना मिलता है। वचन और कर्मों की शुद्धि, संकल्प की शुद्धि पर आधारित है। संकल्प की शुद्धि शुद्ध अन्न, शुद्ध संस्कार, शुद्ध अध्ययन इत्यादि पर आश्रित है और जैसे कि पहले बताया गया है, आहार, व्यवहार, विचार और संस्कार के शुद्धिकरण के लिए योग जरूरी है। शुद्ध होने से योग लगता है और योग लगने से शुद्धि आती है और इन दोनों से आत्मबल, उत्साह, उमंग और खुशी का इतना खजाना मिलता है कि मनुष्य इन द्वारा संसार का हर कार्य कर सकता है। अत: मनुष्य को सब प्रकार से शुद्धि का पालन करना चाहिए क्योंकि शुद्धि अथवा पवित्रता द्वारा ही परमपवित्र परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है, परलोक गमन होता है, पवित्र सतयुगी सृष्टि में पवित्र जीवन और पवित्र स्वराज्य पद की प्राप्ति होती है। पवित्रता ही मनुष्य को महान बनाती है और उसे सब सुखों की अधिकाधिक प्राप्ति कराती है जबकि शारीरिक अपवित्रता – रोग, मानसिक अपवित्रता, अशान्ति एवं चंचलता, बौद्धिक अपवित्रता, प्रभु से वैपरीत्य भाव पैदा कर, हर प्रकार के कष्ट एवं क्लेश का कारण बनती है। ■■■

## नर से नारायण बनानेआए

■■■ ब्रह्माकुमारी रेखा, झाँसी (उ.प्र.)

नर से नारायण बनाने आये शिव भगवान।
नारी तुम ही लक्ष्मी, अम्बा शक्ति महान।।
चौरासी के चक्र में तुम भूल गये हो खुद को।
आदि में तुम थे पूज्य, थी आत्मस्मृति सबको।।
अंतिम घड़ियाँ हैं संगम की, मिली हम को पहचान।
नर से नारायण बनाने आये शिव भगवान।।

मुझको ही पुकारा तुमने कह-कह ऊपर वाले।
कह देते कभी अन्तर्यामी, सबके तुम रखवाले।।
कण-कण में कहें, नासमझ-नादान।
नर से नारायण बनाने आये शिव भगवान।।

देवों और परमात्मा में तुम्हें भेद समझ न आये।
जिस भाव से चाहा पूजा, दर्शन-फल भी दिलाये।।
सारे भ्रम मिटाने आये सर्वशक्तिमान।
नर से नारायण बनाने आये शिव भगवान।।

जिसको ऋषि-मुनियों ने कहा, नारी नर्क का द्वार।
संयम नहीं था खुद पर, सो दिया उसको ही दुत्कार।।
बंधक उसको बनाकर किया कितना अपमान।
नर से नारायण बनाने आये शिव भगवान।।

बाबा ने दिया अमृत कलष, कहा तुम हो शिव शक्ति।
नहीं असम्भव कुछ भी आज, सब हो कर सकती।।
तन-मन-धन से शक्ति-पांडव मिल करें कल्याण।
नर से नारायण बनाने आये शिव भगवान।।

28 जुलाई पुण्यतिथि पर विशेष....

## दीदी मनमोहिनी

# सबके दिलों पर राज करने वाली थी

ब्रह्माकुमार सूर्य भाई, आबू पर्वत

दीदी मनमोहिनी महान तो थी ही परन्तु शक्तिशाली भी बहुत थी। उन पर भगवान की नजर सन् 1936 में ही पड़ गई थी। उनको स्वयं भगवान ने संवारा था, अपनी शक्तियाँ प्रदान की थी, वरदान दिये थे। दीदी बहुत साहूकार घर से थी, सब कुछ छोड़कर इस महान यज्ञ को सफल बनाने में सम्मिलित हो गई थी। बाबा की दृष्टि उन पर पड़ी और एक सेकण्ड में बाबा ने उनको पहचान लिया। उनका नाम गोपी था। बाबा ने कहा, तुम सच्ची गोपी हो और सचमुच वे आते ही प्रभु-प्रेम में मगन हो गई। उन्हें लगा, जिसकी तलाश थी, जिसे ढूँढ़ रही थी, ये वही निराकार परमपिता हैं, जिसे हम शिवबाबा कहते हैं, बस, अपना सब कुछ समर्पित कर दिया।

### बहुत अच्छी योगिन थी

दिल्ली में बहुत समय रही। पंजाब, यू.पी., बिहार और अन्य स्थानों पर सेवा करते हुए, मम्मा के देह-त्याग (1965) के बाद बाबा ने उन्हें माउण्ट आबू बुलाया। चूँकि यहाँ बहुत कार्य चलता था तो किसी कन्ट्रोलर की जरूरत थी। वे यहाँ आ गई और सारा कार्य सुचारु रूप से संचालित करने लगी। बहुत अच्छी योगिन थी। चेहरे पर तेज, मधुरभाषिणी, सबको अपनापन और प्यार देने वाली, जल्दी ही उन्होंने सबके दिलों पर राज कर लिया और बाबा जब अव्यक्त हुए तो अपने इस महान कार्य की जिम्मेवारी दादी प्रकाशमणि के साथ उन्हें भी सौंप दी। दोनों मिलकर सारे यज्ञ का संचालन करने लगे। मैंने उन्हें बहुत समीपता से देखा। उन्होंने बहुतों को समर्पित कराया। कन्याओं को तो इतना अपनापन देती थी कि कहती थी, तुम मेरी सखी हो, आओ, भगवान के कार्य में लग जाओ। संसार की राहों पर तो सभी चल रहे हैं, तुम ईश्वरीय राहों पर आ जाओ।

### तुरन्त यथार्थ निर्णय

मेरा भी सन् 1968 में दिल्ली में उनसे मिलना हुआ। साकार बाबा से मेरी मुलाकात कराकर, समर्पित होने की अर्जी उन्होंने ही बाबा के सामने रखी। उनके माध्यम से मैं समर्पित हुआ। मुझे बहुत खुशी हुई। वे मुझे सदैव अपना मानती थी। हर चीज सिखाती थी। मैं कोई गलती करता था तो शिक्षा देती थी। बहुत प्यार था उनका मुझसे। कहीं मेरी महिमा होती थी तो उनका भी माथा गर्व से ऊँचा हो जाता था। वे अनेक खूबियों से सम्पन्न थी। कुशल प्रशासन के लिए तुरन्त यथार्थ निर्णय, यह उनकी सबसे पहली खूबी थी। मैं छोटा था किन्तु मुझे पता चलता था कि दीदी ने किस तरह एक सेकण्ड में परफेक्ट निर्णय ले लिया, दोनों पक्ष सन्तुष्ट हो गए, किसी को नाराजगी भी नहीं हुई। जब ऐसे केस होते थे तो बहुत दृढ़ता दिखाती थी। ऐसे नहीं कि जिसने गलती की उस पर रहम करे या उसको ऐसे ही चला दे, नहीं। उसको ठीक से समझा कर, प्यार भी देती थी और आगे भी बढ़ाती थी। उसकी कमियों को निकालती थी।

### सदा योगयुक्त

लोग सदा उन्हें योगयुक्त देखते थे। रोज सवेरे उठकर बहुत सुन्दर ढंग से प्रभु मिलन करती थी। विशेष रूप से कन्याएँ जब यज्ञ में आने लगी तो उनको समर्पण कराने का एक मुख्य कार्य उनके जिम्मे आ गया। यज्ञ को आगे बढ़ाना था तो बहुत सारी टीचर्स की जरूरत

थी। उन्हें बहुत अपनापन देती थी, उन्हें सखी सम्बोधित करके कहती थी, तुम हमारे हो, कोई भी दिक्कत हो तो हम तुम्हारे लिए बैठे हैं, सदा ही खाली हैं, कुछ भी जरूरत पड़े, तुम हमारे पास आ जाना। भाई और बहनें भी, बहुत ही लगन के साथ, आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन को इस महान कार्य में सफल कर देते थे। यात्राओं पर भी जाती थी। भिन्न-भिन्न जो हमारे सेवाकेन्द्र थे, वहाँ वे जाती थी। बहुत अच्छी स्थिति थी उनकी। आने वाले सभी विद्यार्थियों पर उनका असर पड़ता था। अव्यक्त बापदादा जब भी आते थे, पार्टियों से मिलने से पहले और ईश्वरीय महावाक्यों के अन्त में दीदी ही बाबा के सम्मुख होती थी। उस समय बाबा के जो गुह्य राज खुले वो सचमुच मेरे लिए बड़ी रोशनी बन गए। अनेक गुह्य बातें मुझे समझ में आ गई जिनमें से अनेक बातें मुझे याद रहती हैं। सपनों के बारे में बाबा ने बहुत अच्छे-से स्पष्ट किया। प्रभु प्लैनिंग क्या है इस युग को बदलने की, यह बहुत अच्छी तरह स्पष्ट किया। बाबा से उनकी ऐसी मुलाकात हर बार होती थी। उनका गहरा प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा और मैं समझने लगा कि ये आत्मा केवल महान आत्मा नहीं, महान आत्माओं में भी महान है जिसको देखकर भगवान भी गुह्य रहस्य स्पष्ट कर देते हैं।

### बाबा के अति समीप थी वे

एक बाद दीदी गिर गई, चोट लग गई लेकिन बहुत अच्छी स्थिति बनाकर रखी, सदैव मुस्कराती रही। बाबा के कार्य में सदा संलग्न रही। बाबा के इस महान कार्य को सम्पन्न करते हुए सन् 1983, 28 जुलाई को उन्होंने अपने देह का त्याग किया। वे शिव बाबा से बातें करती, ब्रह्मा बाबा से बातें करती कि वतन में रहकर जिस आनन्द का अनुभव आप कर रहे हैं, मुझे भी उस आनन्द का अनुभव कराओ। ऑपरेशन के लिए वे मुम्बई में गई थी, एक मास कोमा में चली गई। हम सोचते रहे, ये क्या, ऐसी महान आत्मा कोमा में! हम उन्हें जगाने का भरसक प्रयास करते। उनके देह-त्याग के बाद बाबा का बड़ा सुन्दर संदेश आया कि दीदी की बहुत इच्छा थी कि मुझे सूक्ष्मवतन के परम आनन्द के अनुभव चाहिएँ। तो बाबा ने उनको एक मास वतन में रखा। उनको भिन्न-भिन्न तरह के अनुभव करवाये, विश्व की परिक्रमा लगवाई, सबको सकाश दिलवाई। ऐसी थी ये महान आत्मा जिसकी समीपता का हमने बहुत लाभ लिया। आज हम उनको श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और शत-शत नमन करते हैं। ■■■

## बहुत प्यार करते हैं बाबा को हम

■■■ ब्रह्माकुमारी मधु हमाल, महेन्द्रनगर (नेपाल)

बहुत प्यार करते हैं बाबा को हम।
कसम चाहे ले लो कोई भी कसम।।

तुम्हारे ही हैं हम, तुम्हारे रहेंगे।
दिल की ये बातें तुम्ही से कहेंगे।।
जो तुम साथ हो तो नहीं कोई गम।
बहुत प्यार करते हैं बाबा को हम।।

तुम जो मिले हो, जन्नत मिली है।
मुरझा गई थी वो कलियाँ खिली हैं।।
फिर से हुआ है नया एक जन्म।
बहुत प्यार करते हैं बाबा को हम।।

हमको मिली है रहमत खुदाई।
नहीं छोड़ सकते दौलत जो पाई।।
सहने पड़ें चाहे जो भी सितम।
बहुत प्यार करते हैं बाबा को हम।।

# पत्र सम्पादक के नाम

फरवरी, 2020 अंक में प्रकाशित 'गुस्से का समाधान' लेख बहुत अच्छा लगा और गुस्से के बारे में बहुत जानकारी मिली। इसे पढ़कर बहुतों को गुस्से पर काबू पाना सहज होगा। लेख ऐसा है जैसे दूध से मक्खन मिला। ऐसे जीवनोपयोगी लेख, विकारों पर विजय पाने में मददगार बन सकते हैं।

**ब्र.कु. विट्ठल यादव, पलुस (महाराष्ट्र)**

मार्च, 2020 अंक का कवर चित्र देख करके बहुत खुशी हुई। सर्वशक्तिमान भगवान मेरे साथ है, ऐसा अनुभव हुआ। एक से बढ़कर एक लेख पढ़कर पुरुषार्थ को नई दिशा मिलती है। 'संजय की कलम से' लेख में होली का संपूर्ण रहस्य बताया गया है। संपादकीय लेख 'संयम और सिद्धि' में सफलता प्राप्त करने के लिए 10 पॉइंट्स और उनका विस्तार बहुत अच्छा लगा। ब्र. कु. उर्मिला दीदी का लेख 'पतिव्रत धर्म' पढ़कर पौराणिक बातें याद आई। 'दुर्भावना को सद्भावना में कैसे बदलें' लेख में पुरुषार्थ के कई अति गहरे राज समझ में आए। इसके अतिरिक्त 'ईर्ष्या', 'दत्तात्रेय के 24 गुरु', 'ईश्वरीय ज्ञान के बल से व्यक्तिगत, पारिवारिक, प्रशासनिक क्षेत्र की उपलब्धियां', 'मन का फास्ट फूड' आदि लेख भी बहुत विशेषतापूर्ण हैं। हर पेज के नीचे स्लोगंस की रिमझिम देखकर दिल को सुकून मिलता है। ज्ञानामृत पत्रिका ऐसे ही दिन दोगुनी, रात चौगुनी होकर ऊंचे शिखर पर चढ़ जाए, सभी लेखक आगे बढ़ें और हम पाठकों को भी आगे बढ़ाएं, यही दिल की शुभकामना है।

**ब्र.कु. छायादेवी टेकाले, बार्शी, महाराष्ट्र**

सदा ही मनप्रिय ज्ञानामृत का मार्च अंक उत्कृष्ट बन पड़ा है। संजय की कलम लेख ने होली का मर्म व धर्म समझा दिया। संपादकीय 'संयम और सिद्धि' में दस बातों की सूक्ष्म विवेचना, 'स्वैच्छिक गुलामी से बचें' में इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया की गुलामी का गंभीर विषय एवं 'मन का फास्टफूड' में व्यर्थ आदतों एवं झूठी तसल्ली के आश्वासनों रूपी बीमारियां मनुष्य खुद ही अपना रहा है, ऐसे जागरूकता के बहुत सटीक संदेश आए हैं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर नारी आदर्शों में से एक भूले-बिसरे विषय 'पतिव्रत धर्म' को लेकर आध्यात्मिक व्याख्या आज के समय में अनोखा और सराहनीय प्रयास है। 'दुर्भावना को सद्भावना में कैसे बदलें' पाठक को समाधान की राह दिखा रहा है। एक बहुत जिम्मेवारी वाले उच्च पद पर रहते हुए भ्राता सीताराम मीणा जी का अनुभव इस बात की मिसाल है कि ईश्वरीय ज्ञान एवं अध्यात्म की शक्ति किसी भी क्षेत्र में कमाल के परिणाम ला सकती है, जरूरत है उन पर दिल से विश्वास करने की।

**ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टीकमगढ़**

मार्च, 2020 की पत्रिका में संजय की कलम से बहुत सुंदर लगा। संपादकीय 'संयम और सिद्धि' हृदय को छू गया। 'पतिव्रत धर्म' लेख बहुत ही सराहनीय रहा। सेवानिवृत्त आईएएस ब्रह्माकुमार सीताराम मीणा जी का ज्ञान में प्रवेश करने का अपूर्व अनुभव प्रशंसनीय है। 'ईर्ष्या को कैसे समाप्त करें?' लेख ईर्ष्या को मिटाने में बहुत ही मददगार साबित हो सकता है। सबके जीवन को पलटाने वाली, दैवी मार्ग पर ले जाने वाली यह पत्रिका अलौकिक है, इसका स्थान कोई दूसरी पत्रिका नहीं ले सकती। सभी पाठकों एवं संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई।

**ब्रह्माकुमार हरिदत्त शर्मा, मुख्य संपादक,**
**स्कूल प्रांगण 'पाक्षिक', आगरा**

# गुणग्राही दृष्टि

ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन, शान्तिवन

किसी शहर में एक बहुत दयालु तथा धनवान सेठ रहते थे। एक बार दोपहर में वे विश्राम कर रहे थे, तभी उनके कानों में एक आर्त्त पुकार आई कि मैं बहुत भूखा हूँ, मुझे भोजन दे दो। सेठ जी एकदम उठे, दरवाजे पर गए तो देखा, एक वृद्ध भिखारी भोजन के लिए प्रार्थना कर रहा है। दयालु सेठ ने उसे भरपेट भोजन करा दिया। भिखारी वास्तव में यमदूत था, सेठ जी को लेने आया था परन्तु सेठ जी की दया के बदले अब उस पर कुछ उपकार भी करना चाहता था। उसके हाथ में 'कर्मों के लेख' नाम की एक पुस्तक थी, उसने वह सेठ जी की ओर बढ़ा दी और कहा, इस पुस्तक में पाँच नम्बर पन्ने पर आपके कर्मों के लेख हैं, मैं पाँच मिनट का समय देता हूँ, आप अपने कर्म-लेख में जो भी परिवर्तन करना चाहो, कर सकते हो। सेठ जी ने पुस्तक पकड़ी, पाँच नम्बर पन्ना खोला परन्तु पाँच के साथ उसकी नजर छह नम्बर पर भी पड़ गई, जिसमें उसके पड़ोसी का 'कर्म लेख' था। सेठ जी उसे पढ़ने लगे। उसमें लिखा था, तन का सुख, मन का सुख, धन का सुख, सम्बन्ध का सुख...। पढ़ते-पढ़ते सेठ जी झल्ला गए, सोचने लगे, इस अवगुणों की खान पड़ोसी को इतने सुख! उन्होंने कलम उठाई और पड़ोसी के सुखों वाली लाइन को काट डाला। इतने में पाँच मिनट पूरे हो गए। यमदूत ने कहा, सेठ जी चलो, समय पूरा हुआ।

सेठ जी को दया के गुण के फलस्वरूप अपने भाग्य को सँवारने का मौका मिला था परन्तु परदर्शन, परदोष दृष्टि, परचिन्तन के अवगुण के कारण वे उसका लाभ उठा न सके। अपना भाग्य सँवारने का समय उन्होंने दूसरे का भाग्य बिगाड़ने में लगा दिया।

### गुणचोर बनें, स्टाइल चोर नहीं

कहीं हम तो ऐसा नहीं कर रहे हैं? भगवान कहते हैं, गुणचोर बनो। आधुनिक युग में अधिकतर मनुष्य और उनमें भी नारियाँ एक-दूसरे के हेयर स्टाइल, कपड़ों की डिजाइन, शृंगार के सेट आदि की नकल करती हैं परन्तु इनसे कोई आत्मकल्याण होने वाला नहीं है। आत्मिक सुख तो तब मिले जब हम एक-दूसरे के गुणों की नकल कर गुणवान बनते जाएँ।

### विष्णु की या राम की राजधानी

विचार मानव की बुद्धि का भोजन है। अगर ये विचार गुणग्राही हैं तो मानो बुद्धि को शुद्ध भोजन मिल रहा है और यदि अवगुणग्राही हैं तो मानो बुद्धि को अशुद्ध भोजन मिल रहा है। स्थूल रूप में यदि कोई अशुद्ध (तामसिक) भोजन ग्रहण कर ले तो इसे अपनी कमजोरी समझता है, अपने वैष्णव होने पर इसे दाग समझता है। अवगुण रूपी अशुद्ध भोजन ग्रहण करना भी अपने को विष्णु की राजधानी से वंचित करना है। वैष्णव होने की अपनी योग्यता को कम करना है और राम की राजधानी का चुनाव करना है।

### व्यर्थ की होशियारी

कई आत्माएँ दूसरे की कमजोरी या अवगुण को जान लेना अपनी बहुत बड़ी होशियारी समझती हैं। वे समझती हैं कि हम इन बातों को जानकर बहुत बड़े ज्ञानी बन गए। लेकिन, ज्ञान का अर्थ है आत्मा में प्रकाश और शक्ति का संचार। तो क्या ऐसी बातें जानकर आत्मा सचमुच प्रकाशमान और शक्तिशाली बनी? एक प्रकाशमान और शक्तिशाली आत्मा दूसरे के जीवन में प्रकाश बिखेरती है और उसकी कमजोरियों का हरण

कर उसे बदल देती है। तो क्या, जिसके अवगुण को जानकर हम तथाकथित ज्ञानी बने, उसके अवगुण को, कमी-कमजोरी को हमने हरा? क्या उसके जीवन में प्रकाश बिखेरा? क्या हमने उसको बदला? या फिर उसकी कमी को जानकर उससे बदला (प्रतिशोध) लिया? ऐसे ज्ञानी बनने के बजाए न जानने वाला बने रहना ही अच्छा है। जैसे द्वापरयुग से अनेक ज्ञानी धरती पर अपना रोल प्ले करने आए पर उन्होंने क्या किया? सृष्टि का तो पतन ही हुआ। जो ज्ञान उत्थान न कर सके, ऐसे ज्ञान के बजाए कोरा कागज रहना ज्यादा अच्छा है।

### जल्दी उठकर क्या किया?

एक बार एक सन्त का काफिला कहीं जा रहा था। चलते-चलते रात हुई, सभी सो गए। सुबह चार बजे सन्त जी उठे और उनका प्रिय शिष्य भी जाग गया, बाकी सब सोये हुए थे। प्रिय शिष्य ने सन्त को प्रणाम किया और कहने लगा, गुरुजी, ये कैसे साधक हैं, आलसी होकर पड़े हैं, इन्हें अपनी साधना की कद्र नहीं है, ये लोगों को क्या उपदेश देंगे, कैसे सफल प्रचारक बनेंगे? गुरुजी ने कहा, बेटा, यदि तुमको यह परचिन्तन ही करना था तो उठकर क्या किया? इससे अच्छा तो तुम भी सोये रहते। उठकर अपने समय और शक्ति को अपने कल्याण में लगाने के बजाए दूसरों के अकल्याण में क्यों लगा रहे हो? भगवान कहते हैं, जब कोई परदोष वर्णन करता है तो यह भूल जाता है कि मैं स्वयं परचिन्तन के दोष से ग्रसित हो रहा हूँ। किसी की कमजोरी वर्णन करना, अपनी समाने की शक्ति की कमजोरी जाहिर करना है।

यदि कोई व्यक्ति किसी के अवगुण दर्शन-वर्णन से अनजान बना रहता है तो कई लोग उसे हँसी-हँसी में बुद्धू कह देते हैं कि तुम तो कुछ जानते ही नहीं लेकिन ऐसा बुद्धू बने रहना अच्छा है।

### भाई-भाई भूल, वकील-जज नहीं बनो

अगर किसी आत्मा में कमी-कमजोरी है, मर्यादा के विपरीत कार्य है तो परमपिता परमात्मा द्वारा निमित्त बनाए गए उच्चतम न्यायालय में केस दाखिल करो अर्थात् निमित्त आत्माओं के समक्ष उसे प्रकट करो। खुद ही भाई के बजाए वकील या न्यायाधीश बनकर फैसला न सुनाओ। ज्ञान में ऐसी शक्ति है कि एक न्यायाधीश भी भाई बन, भाई जैसा व्यवहार करने लगता है फिर हम भाई होकर भी न्यायाधीश बनने का स्वाँग क्यों करें!

यज्ञ की एक पुरानी घटना है कराची की। ब्रह्मा बाबा पर लगाए गए किसी केस के सिलसिले में उनकी सुपुत्री दादी निर्मलशान्ता को, उनकी तरफ से कोर्ट में जाना पड़ा। उस जमाने में महिलाएँ कोर्ट में नहीं जाती थी। उसे देख जज के मन में आया कि ब्रह्मा बाबा की सुपुत्री उनकी ओर से कोर्ट में आई है, बाबा को कोई बेटा नहीं है क्या अत: दादी से ही पूछ लिया, बहन जी, आपके कितने भाई हैं? दादी जी, मुख पर अंगुली रख सोचने की मुद्रा में खड़ी हो गई। तब जज ने कहा, बहन जी, सोच क्या रही हो, मैं पूछ रहा हूँ, आपके कितने भाई हैं? तब दादी जी ने कहा, वही तो सोच रही हूँ कि कितने बताऊँ!

जज ने कहा, इसमें सोचने की क्या बात है? दादी जी ने कहा, जज साहब, जब आप मुझे बहन जी कह रहे हैं तो एक भाई तो आप ही हो गए और इस प्रकार विश्व की करोड़ों आत्माएँ मेरे भाईहैं। इसी विचार से कह रही थी कि कितने बताऊँ? दादी की भाई-भाई की इस प्रैक्टिकल धारणा से जज इतना प्रभावित हुआ कि उसने केस खारिज कर दिया। इस घटना का उल्लेख करने का उद्देश्य यही है कि जब सच्चा ज्ञान मिला तो जज भी सही मायने में भाई बन गया तो फिर हम ज्ञानी आत्माएँ, भाई-भाई का नाता भूल किसी के प्रति जज या वकील क्यों बनें? न्यायाधीश का पद तो भगवान का ही रहने दें, हम भाई ही ठीक हैं।

दूसरी बात, यदि किसी का केस दाखिल करते हैं तो इस बात का भी ध्यान रखें कि अमानत में ख्यानत न होने पाए। जो कहें, सच कहें, उसमें मिलावट और बनावट न हो। अपनी तरफ से जोड़-तोड़ की कोशिश न हो। जितना हो सके केस फारिग करने की

शुभभावना से इशारा दे दें। बात अपने मन में न रखें और न दूसरों के मन्मनाभव होने में विघ्न रूप बनें।

### आदत बुरी बला

अवगुण रूपी गन्दगी के दर्शन की आदत एक बार डाल ली तो बार-बार बुद्धि न चाहते हुए भी उसी तरफ जाती रहेगी। फिर आदत संस्कार में बदल जाएगी जिसे बदलने में बहुत-बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए भगवान कहते हैं, अगर देखते भी हो तो मास्टर ज्ञान सूर्य बन अवगुणों रूपी किचड़े को जलाने के भाव से देखो, शुभचिन्तक बनो। यह भी न सोचो कि यह आदत तो कम या ज्यादा सभी में है। इस प्रकार की सोच प्राप्तियों से वंचित कर देगी। दूसरों के बारे में न सोच, अपनी प्राप्तियों में लग जाओ।

### कर्मगति को स्मृति में रखो

उल्टी होशियारी, उल्टा लटकायेगी। काम चलाने की होशियारी जितनी दिखाएँगे, बाद में उतना ही चिल्लाना पड़ेगा। अल्पकाल के लिए वाह-वाही पा भी ली लेकिन अनेक जन्मों के श्रेष्ठ पद को गँवा देंगे। कई कहते हैं, प्रत्यक्षफल तो पा लें, भविष्य में देखा जाएगा। लेकिन, प्रत्यक्षफल है अतीन्द्रिय सुख और वह सदा का है, अल्पकाल का नहीं। अल्पकाल के फल के साथ असन्तुष्टता का काँटा भी चुभता रहेगा अत: सर्व के गुणों की माला पहनें, कंकड़ों की नहीं।

### मधुमक्खी बनें

मक्खियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक है केवल फूलों पर बैठ उनका मकरन्द चूसने वाली, उसे शहद में बदलकर, सबको औषधि और ताकतवर खुराक देकर परोपकार करने वाली। दूसरी है स्वस्थ शरीर में यदि कहीं फोड़ा है तो उस फोड़े का मवाद चूसकर, जगह-जगह फैलाकर रोगों को बढ़ावा देने वाली, अपकार करने वाली। शहद की मक्खियों को पाला जाता है परन्तु रोग फैलाने वाली को तो देखते ही भगाया जाता है। हम कैसे बनें? यह निर्णय हमारा है।

### होलीहंस बनें

हंस, माँ सरस्वती का वाहन दिखाया गया है। इसका भावार्थ यही है कि माँ सरस्वती उसी की बुद्धि पर आरूढ़ होती है जो हंस की तरह मोती चुगता है अर्थात् गुण रूपी मोती धारण करता है। माँ सरस्वती का वरद् हस्त सदा हमारे सिर पर रहे, इसके लिए बस एक ही धुन रहे, गुण...गुण...और गुण...। ■■■

## मिलने आते हुजूर हैं

■■■ ब्रह्माकुमार निर्विकार, मिश्रिख तीर्थ (उ.प्र.)

अमृतवेले शिवबाबा को, करना याद जरूर है।
उस वेला में ब्रह्मलोक से, मिलने आते हुजूर हैं।।
परमपिता संगम पर आकर राजयोग हैं सिखा रहे।
सतयुग आना है धरती पर, उसका दृश्य दिखा रहे।।
नर्कमयी दुनिया है जानी, आना स्वर्ग जरूर है।
उस वेला में ब्रह्मलोक से, मिलने आते हुजूर हैं।।

वहाँ सभी तो पावन होंगे, प्रकृति दासी बनती है।
दो-दो ताज सुशोभित होंगे, 16 कला झलकती है।।
ऐसी दुनिया में जाने को, हम भी हुए मजबूर हैं।
उस वेला में ब्रह्मलोक से, मिलने आते हुजूर हैं।।

शिवबाबा की श्रीमत पर चल जीवन श्रेष्ठ बनायेंगे।
महाशत्रु पर विजयी बनकर, कामजीत कहलायेंगे।।
आत्मा का अब ज्ञान हुआ है, देह का मिटा गुरूर है।
उस वेला में ब्रह्मलोक से, मिलने आते हुजूर हैं।।

योग लगाकर पावन बनकर, शान्तिधाम घर जायेंगे।
सृष्टि-चक्र का ज्ञान ग्रहण कर, राजाई में आयेंगे।।
नर से नारायण बनने का, ज्ञान यही मशहूर है।
उस वेला में ब्रह्मलोक से, मिलने आते हुजूर हैं।।

संगम है पुरुषार्थ वेला, अखुट कमाई करनी है।
84 जन्मों की खातिर, झोली भरकर रखनी है।।
एक के बदले लाख वो देता, कर देता भरपूर है।
उस वेला में ब्रह्मलोक से, मिलने आते हुजूर हैं।।

# रूहानी प्यार

ब्रह्माकुमार सन्तोष, ज्ञानामृत, शान्तिवन

अखबार में छपी एक खबर पर जब मेरी नज़र पड़ी तो मैं सोचता ही रह गया। खबर थी कि Love has killed more people than terrorism in India, according to statistics (आतंकवाद से ज्यादा लोग प्यार के कारण मरे हैं)। मन सोचने पर विवश हो गया कि ये कैसी खबर है! ये कैसा प्यार है ! सुना था कि प्यार इन्सान को जीना सिखाता है। प्यार एक ताकत है, प्यार एक इबादत है, प्यार जिन्दगी है, प्यार बन्दगी है, प्यार से प्यारा और कुछ भी नहीं है। कुछ लोग तो प्यार को ईश्वर तक मानते हैं (Love is God कहते हैं)। प्यार खुशी, प्यार हँसी, प्यार चाहत, प्यार मुस्कराहट, प्यार अजन्मी और अमर ऊर्जा है, जो हमारे जीने की वजह है। प्यार हमें सकारात्मकता देता है। प्यार एक अभिव्यक्ति है मन की, प्यार निर्मल है। प्यार के बिना जीवन नीरस है। प्यार एक अहसास है, एक अनुभूति है। फिर ये कौन-सा प्यार है जिसमें मौत मिल रही है। क्यों लोग प्यार में अपने जीवन को समाप्त कर रहे हैं? क्यों? क्या यही प्यार है?

टाईम्स ऑफ इण्डिया में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक 2001 से 2015 तक 38585 लोग प्यार के लिए मरे हैं। इसमें आत्महत्या एवं हत्या दोनों शामिल हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, भारत में अब तक (एफ.आई.आर के अनुसार) 79189 प्रेम के कारण हुई आत्महत्याओं की संख्या है एवं 26000 प्रेम-प्रसंगों के कारण हुई हत्याओं की संख्या है। विश्व में प्रति वर्ष लगभग 800000 से 1000000 लोग आत्महत्या करते हैं और इनमें आधे से ज्यादा कारण प्रेम-प्रसंगों के हैं। भारत में इसके लिए आई.पी.सी. की धारा 506 के तहत 2 साल की जेल और जुर्माने का प्रावधान किया गया है। फिर भी प्रति वर्ष प्यार के कारण मरने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर क्यों हो रहा है ऐसा?

प्रेम, प्यार, इश्क कई नामों से हम इसे जानते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं -

1. दैहिक प्यार
2. साधनों और सुविधाओं के कारण होने वाला प्यार
3. रूहानी प्यार

## दैहिक प्यार

प्रेम में हो रही हत्या एवं आत्महत्या का मूल कारण है दैहिक प्रेम। वास्तव में दैहिक प्रेम एक आकर्षण के कारण उत्पन होता है। हमें किसी का चेहरा पसन्द आ जाता है, किसी की आँखें पसन्द आ जाती हैं, किसी का बात करने का स्टाइल पसन्द आ जाता है या किसी का व्यवहार। ये आकर्षण ही होता है। आकर्षण वाला प्यार बहुत जल्दी शुरू होता है और जल्दी खत्म हो जाता है। आकर्षण ज्यादातर वासना के कारण भी होता है। वास्तव में ये प्रेम नहीं बल्कि वासना ही है, जो आकर्षण से मिलता है एवं क्षणिक होता है । यह सम्मोहन की वजह से होता है। जल्दी ही इससे मोह भंग हो जाता है और मन ऊब जाता है। यह प्रेम धीरे-धीरे कम होने लगता है और भय, अनिश्चितता, असुरक्षा और उदासी आने लगती है।

अक्सर लोग पहली नज़र में प्रेम को अनुभव करते हैं, फिर धीरे-धीरे मन में कामना, वासना एवं अनेक प्रकार की दूषित इच्छायें जागृत होने लगती हैं जिन्हें हासिल करने के लिये प्रेमी प्रयत्न करने लगते हैं। जैसे-जैसे समय गुजरता है, प्रेम कम और दूषित हो जाता है और घृणा में परिवर्तन होकर गायब हो जाता है। जब प्रेम को चोट लगती है या इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है तो वह क्रोध बन जाता है और जब वह विक्षोभ होता है तो ईर्ष्या बन जाता है। हत्या एवं आत्महत्या का मुख्य कारण यही है।

- प्रेम जब क्रोध, ईर्ष्या या नफरत में बदल जाता है तो ऐसे में प्रेमी या तो स्वयं को खत्म कर देते हैं या फिर दूसरों को मार देते हैं।
- प्रेम में चोट लगने के कारण भी आत्महत्या या हत्या कर देते हैं।
- इच्छाओं की पूर्ति न होने पर स्वयं को समाप्त कर लेते हैं।
- प्रेम में रुकावट डाले जाने पर भी प्रेमी रुकावट डालने वालों को खत्म कर देते हैं।

वास्तव में दैहिक प्रेम, देह से उत्पन्न होकर देह के साथ ही खत्म हो जाता है। इसे हम सच्चा प्रेम नहीं कह सकते क्योंकि यह अस्थाई है। आज ज्यादा, कल कम और धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। कबीर जी ने कहा है,

घड़ी चढ़े, घड़ी उतरे, वह तो प्रेम न होय,
अघट प्रेम ही हृदय बसे, प्रेम कहिए सोय।

## साधनों और सुविधाओं के कारण होने वाला प्यार

जो प्रेम सुख-सुविधा के कारण होता है वह भी अस्थाई होता है क्योंकि उसमें स्वार्थ और लोभ छिपा हुआ होता है। इसमें प्यार मात्र दिखावट या बनावट होता है, वास्तविक नहीं। उदाहरण के लिए, यदि किसी गरीब लड़के या लड़की को किसी अमीर लड़के या लड़की से प्यार हुआ, तो गरीब सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए प्यार का दिखावा करता रहेगा परन्तु वह प्यार, सच्चा प्यार नहीं होता है। जैसे-जैसे उसकी स्वार्थ-पूर्ति में बाधा आने लगेगी या सुविधायें मिलनी बन्द हो जायेंगी वैसे-वैसै प्यार भी कम होने लगेगा। ऐसे प्रेमियों के लिए संत कबीर जी ने बहुत अच्छी बात कही है –

प्रेम पियाला सो पिये, शीश दक्षिणा देय,
लोभी शीश ना दे सके, नाम प्रेम का लेय।

प्रेम-प्याला पीने वाले अपनी गर्दन भी दक्षिणा में दे सकते हैं अर्थात् कुर्बान कर सकते हैं परन्तु लोभी व्यक्ति कुर्बानी नहीं दे सकता जबकि बार-बार कहता रहेगा कि मुझे तुमसे बहुत प्यार है।

प्रेम ना बारी उपजै, प्रेम ना हाट बिकाय,
राजा प्रजा जंही रुचै, शीश देयी ले जाय।

अर्थात् प्रेम ना तो खेत में पैदा होता है और न ही बाजार में बिकता है। राजा या प्रजा जो भी प्रेम का इच्छुक हो वह अपने शीश अर्थात् गर्व या घमंड का त्याग करके ले जाये।

## रूहानी प्यार

कबीर जी ने कहा है,
प्रीति बहुत संसार में, नाना विधि की सोय,
उत्तम प्रीति सो जानिए, राम नाम से जो होय।

अर्थात् संसार में अनेक प्रकार के प्रेम हैं परन्तु उत्तम प्रेम वह है जो राम नाम अर्थात् परमपिता परमेश्वर से लगे।

प्रेम प्रेम सब कोई बोले, प्रेम ना चिन्है कोई,
जा मारग हरि जी मिले, प्रेम कहाये सोई।

अर्थात् प्रेम की बात तो सब करते हैं परन्तु प्रेम को जानते नहीं हैं। जिस मार्ग में हरि मिलते हैं वही सच्चा प्रेम है।

प्रेम सिर्फ एक भावना नहीं है, वह व्यक्ति का शाश्वत अस्तित्व होता है। प्रेम शब्द का इतना दुरुपयोग हुआ है कि हर एक कदम पर इसके अर्थ को लेकर प्रश्न खड़े होते हैं। प्यार अहसास है, बन्धन नहीं। प्यार एक अनुभूति है जिसको व्यक्त करने से अधिक उसको हृदय में सृजित करने की आवश्यकता है। सच्चा प्रेम उसी व्यक्ति में हो सकता है जिसने आत्मा को पूर्ण रूप से जान लिया हो। आत्म-ज्ञान के बिना सच्चा प्रेम सम्भव ही नहीं। कबीर जी का एक दोहा है -

प्रीत पुरानी ना होत है, जो उत्तम से लाग
सौ बरस जल में रहे, पत्थर ना छोरे आग।

अर्थात् प्रेम कभी भी पुराना नहीं होता यदि वह उत्तम यानी परमात्मा से किया गया हो। जैसे सौ वर्षों तक पानी में रहने पर भी पत्थर से आग अलग नहीं होती है।

## प्रेमयोगिनी मीराबाई

प्रभुप्रेम में रंगने वालों में एक नाम मीराबाई का है। मेड़ता की राजकुमारी थी मीराबाई जिसकी शादी हुई थी महाराणा सांगा के परिवार में। राजा भोजराज की पत्नी थीं। प्रभु को अपना सबकुछ माना और राजपाट, महल, दास-दासी सब कुछ छोड़ जोगन हो गई प्रभु प्रेम में।

एक बार मीराबाई वृन्दावन में बल्लभाचार्य के मन्दिर में गईं। बल्लभाचार्य के मन्दिर में ये परम्परा थी कि कोई महिला उसमें नहीं जा सकती थी। जब मीरा पहुँची तो लोगों की एक भीड़ उनके पीछे-पीछे उनको देखने के लिए उमड़ पड़ी थी। मन्दिर के द्वार पर बल्लभाचार्य ने उन्हें रोक दिया और कहा कि यहाँ स्त्री का प्रवेश निषेध है। व्याकरण में आत्मा शब्द स्त्रीलिंग है और परमात्मा शब्द पुल्लिंग है। मीरा ने कहा कि फिर आप अन्दर कैसे हो क्योंकि पुरुष तो एक ही है जो अन्दर बैठा है, बाकी सब तो स्त्री हैं। बल्लभाचार्य शर्मिन्दा हुये और उन्हें अन्दर जाने दिया। वहाँ मीराबाई ने भजन गाया, मेरा तो गिरधर गोपाल ..। सभा में संगीत के बहुत बड़े ज्ञाता स्वामी हरिदास जी, जो तानसेन और बैजू बावरा के गुरु थे, उपस्थित थे। उन्होंने मीराबाई के भजन सुने और कहा कि मीराबाई तुमने गाया तो ठीक परन्तु राग में नहीं है। मीरा ने कहा कि मुझे मालूम है कि मैंने राग में नहीं गाया क्योंकि मनुष्य को रिझाने के लिए राग में गाया जाता है परन्तु प्रभु को रिझाने के लिए अनुराग में गाया जाता है। मैंने अनुराग में गाया है।

रूहानी प्यार सदाबहार नवीनतम रहता है। जितना इसके निकट जायेंगे उतना ही इसमें अधिक आकर्षण और गहनता आती है। यह हर पल उत्साहित रखता है। रूहानी प्रेम आकाश के जैसा है जिसकी कोई सीमा नहीं है। ये ही सच्चा प्यार है। रूहानी प्यार हमें जीना सिखाता है, न कि मरना। जिसे रूहानी प्यार हो जाये उसका प्यार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जायेगा, कम नहीं होगा। जितना-जितना हम प्यार में खो जायेंगे उतना-उतना हमें अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती जायेगी। कभी न खत्म होने वाले सुख, निरन्तर मिलने वाली शान्ति की अनुभूति होगी।

कबीर जी ने कहा है,
सबै रसायन हम किये, प्रेम समान ना कोये,
रंचक तन में संचरै, सब तन कंचन होये।

रूहानी प्यार में रूहें जब उस साजन, प्रीतम, माशूक, दिलवर के प्रेम में लीन हो जाती हैं तब इस संसार का कोई भी आकर्षण उन्हें आकर्षित नहीं कर पाता। बस मैं और मेरा साजन प्रभु दूसरा और कोई नहीं।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि,
प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं।

स्वार्थ-वश किया गया प्रेम न सांसारिक प्रेम को स्थाई रख सकता है और न ही ईश्वरीय प्रेम को। प्रेम करो परमात्मा से, प्रेम ही सुख का सार है।■■■

# दुआओं का बल

■■■ ब्रह्माकुमार नारायण, इंदौर

जो ताकत दुआओं में होती है वह दवा और धन में नहीं होती है। दुआएँ असंभव को भी संभव कर सकती हैं। जीवन से निराश व्यक्ति में जीने की आशा पैदा कर सकती हैं। जब सारे डॉक्टर, मरीज के ठीक होने की आशा छोड़ दें तब दुआएं ही मृतप्राय व्यक्ति में प्राण फूँक सकती हैं।

## दुआओं का असर कब शक्तिशाली होता है?

जब किसी प्यासे को पानी पिला दें, भूखे को भोजन करा दें, भटके राही को सत्य राह दिखा दें, निराश व्यक्ति में आशा की किरण पैदा कर दें, हिम्मतहीन में हिम्मत पैदा कर दें, रोगी को निरोगी बना दें, नाउम्मीद में उम्मीद की किरण जगा दें तो उनके दिल से निकली हुई दुआओं में जबरदस्त शक्ति होती है। दुआओं की इस शक्ति से हमारे जीवन में कभी दुख, अशांति की काली रात हो नहीं सकती।

## वर्तमान समय दुआएं प्राप्ति का सर्वोत्तम समय

वर्तमान समय कोरोना वायरस के कारण सारा विश्व चिंतित व भयभीत है। दिन प्रतिदिन बढ़ते मौत के आंकड़े आत्माओं में तनाव, निराशा, डिप्रेशन और रिश्तों में दरारें पैदा कर रहे हैं। संकट के इस नाजुक दौर में लोगों की इन मानसिक समस्याओं को नजरअंदाज करने से न केवल उनका जीवन बल्कि समाज भी प्रभावित होगा। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि कोरोना का लंबे समय तक प्रभाव रहेगा। इस त्रासदी के कारण पूरी दुनिया को खराब मानसिक सेहत का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में हम सभी राजयोगियों के पास सुंदर अवसर है लोगों को इन बीमारियों से बाहर निकालकर दुआएं प्राप्त करने का। इन दुआओं से हम 21 जन्म ही नहीं बल्कि अनेक जन्म तक श्रेष्ठ प्राप्ति की तकदीर की रेखा खींच सकते हैं।

## किन की दुआओं में अधिक शक्ति होती है?

दुआएं तो हर कोई दे सकता है परंतु साधकों और महात्माओं की दुआओं में चमत्कारिक शक्ति होती है। इनसे भी ज्यादा शक्ति उन राजयोगियों की दुआओं में होती है जिनके पास संपूर्ण ब्रह्मचर्य का और योग का बल है, जिनके दिल में ईश्वर के सिवाय और कोई इच्छाएँ, तमन्नाएँ, कामनाएँ नहीं हैं, उनके संकल्पों में एटम बम से भी अधिक निर्माणकारी शक्ति होती है।

## दुआएं देने का सबसे उपयुक्त समय

दुआएं तो स्वत: निरंतर दिल से निकलती रहती हैं जो गुलाब के फूल की तरह चारों तरफ खुशबू बिखेरती रहती हैं परंतु इनके लिये अमृतवेला सबसे उपयुक्त समय है। अमृतवेले चारों ओर की तमोप्रधान आत्माएं सोई हुई होने के कारण उनके विकारी संकल्प दबे हुए रहते हैं। हमारी वृत्ति से वायब्रेशंस चारों ओर फैल कर सुंदर वातावरण का निर्माण करते हैं। उस समय किए गए शुभभावना-शुभकामना के श्रेष्ठ संकल्प चारों ओर अगरबत्ती की तरह फैलने लगते हैं। भयभीत, चिंतित, दुखी, अशांत आत्माओं को निर्भयता, शांति, शक्ति का अनुभव होने लगता है और उनके दिल से निकली दुआएं हमारे जीवन की राहें आसान बना देती हैं।

## विधि

पृथ्वी रूपी ग्लोब पर बैठकर, परमधाम में ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव के साथ शक्तिशाली स्थिति में स्वयं को स्थित कर विश्व कल्याण के संकल्प प्रतिदिन करें। शिव बाबा ने वर्तमान रूप में सभी को इतना सुंदर अवसर दुआएं प्राप्ति का दिया है। इसमें एक तरफ़ आत्माओं को आवश्यकता है तो दूसरी तरफ हम आत्माओं को भी समय, संकल्प को सफल कर 21 जन्मों के लिए मालामाल बनने की, इष्ट बनने की, भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने की जरूरत है। ■■■

# धन के लिए नीति और रीति

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक शहर में एक करोड़पति व्यापारी था जो पत्नी और एकमात्र पुत्र के साथ वैभवशाली जीवन व्यतीत कर रहा था और दिन-रात अपनी पूंजी को दोगुनी-चौगुनी करने में ही लगा रहता था। कई देशों में उसका व्यापार फैल चुका था, वह रात को भी चैन से नहीं सोता था।

एक दिन जब वह घर आया और भोजन करने बैठा तो अचानक शार्ट सर्किट से घर में आग लग गई। वह दौड़ कर बाहर आकर मदद के लिए पुकारने लगा कि जल्दी आओ, मेरी तिजोरी, मेरे हीरे-जवाहरात जल्दी बाहर निकालो। पड़ौसी तत्काल दौड़कर, जो सामान ला सकते थे, बाहर ले आये।

कुछ लोगों ने व्यापारी से पूछा, अन्य कोई खास चीज रह गई हो तो बताओ। वह बोला, मुझे तो कुछ याद नहीं, फिर भी एक बार आप लोग अन्दर जाकर देख लो। वे अन्दर गए और इस बार करुण क्रंदन के साथ बाहर निकले।

व्यापारी ने उनसे दुखी होने का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि आपका एकमात्र पुत्र जो सोया हुआ था, वह जलकर मृत्यु को प्राप्त हो गया है। धन के नशे में व्यापारी अपने बेटे को ही भूल गया था, जो उसकी सर्वाधिक अमूल्य वस्तु थी और जिसे फिर पाया नहीं जा सकता था।

किसी ने ठीक ही कहा है, धन की चाह गलत नहीं है परन्तु चाह की अति अनुचित है क्योंकि यह नैतिक पतन को जन्म देती है। जिस व्यक्ति के मन में सदा धन कमाने की लालसा बनी रहती है उसके मूल्य तथा आदर्श अपने आप समाप्त होने लगते हैं। धन के लोभी व्यक्तियों में अपराध, अनैतिकता, कुंठा, निराशा, भेदभाव आदि पनपने लगते हैं। वे अपने से ऊँचे स्तर के लोगों को देखते हैं और उनमें किसी प्रकार का चारित्रिक उत्कर्ष, त्याग की भावना आदि न पाकर स्वयं भी उसी राह को अपनाने के लिए प्रेरित होने लगते हैं।

ठगी और बेईमानी से कमाया गया काला धन, दूषित मन व दूषित बुद्धि की उपज है। शान्ति, धीरज, सन्तोष, परिश्रम, नैतिकता आदि के अभाव में मनुष्य का मन काला होने लगता है। वह स्वार्थ के गुड़ में मक्खी की तरह चिपकने लग जाता है। धन का अभिमान उसे इन्सान से हैवान बना देता है।

धन के साथ डर भी छिपा है। हर धनवान व्यक्ति अपनों से ही भय खाता है, चोरों से भी डरता है तो कभी सरकार का हाथ न पड़ जाए, इसका भी डर उसे सताता है। आधुनिक युग में धन के परस्पर विरोधी रूप सामने आ रहे हैं। कहा जाता है,

- धन ताकतवर कमाते हैं परन्तु धन कमजोरी भी बन जाता है।
- धन से चतुराई आती है परन्तु धन बुद्धि भ्रष्ट भी करता है।
- धन से दोस्त बनते हैं परन्तु धन दुश्मनी का कारण भी है।
- धन से महल बनते हैं परन्तु धन घर बिखेरता भी है।
- धन से सुरक्षा मिलती है परन्तु धन असुरक्षित भी कर देता है।
- धन से हिम्मत खुलती है परन्तु धन दिन-रात डराता भी है।

विनाशी धन खाद की तरह है। जब तक इसे फैलाया ना जाए तब तक यह बहुत कम उपयोगी होता है। कहावत है, धन को नीति से कमाएँ, रीति से खर्च करें अर्थात् ईमानदारी और परिश्रम से धन कमाएँ

**शेष भाग पृष्ठ 22 पर**

# यौगिक खेती

ब्रह्माकुमारी प्रभा जैन, लोक विहार, दिल्ली

भारत के कृषक को अन्नदाता कहा जाता है। उसकी लगन व कड़ी मेहनत से ही अच्छा अन्न, फल, फूल व सब्जियाँ उपलब्ध होती हैं। लेकिन, वर्तमान काल में जनसंख्या जैसे-जैसे बढ़ती गई, खेती पर अनाज उत्पादन का दबाव बढ़ता गया। अधिक अन्न उपजाने की अनेक विधियाँ भी अपनाई गई। परिणामस्वरूप, धरती माँ की शक्ति भी क्षीण होने लगी। प्रकृति के सभी तत्व अपना सन्तुलन खोने लगे। लोभी एवं हिंसक वृत्तियों से उपजाये हुए अन्न ने सबकी मनोवृत्तियों को भी हिंसक बना दिया। तन और मन में अनेकानेक बीमारियों ने मनुष्यों को अति दुखदायी स्थिति में ला दिया। प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ खेती पर अनेक प्रकार के कीट और अनेक रोगों ने भी अपना प्रभाव डाला।

## कीटनाशकों के दुष्परिणाम

आज पूरे विश्व में अनाज की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद और कीटनाशकों का अत्यधिक इस्तेमाल हो रहा है जिसके अनेक दुष्परिणाम दिखाई दे रहे हैं। प्रदूषण बढ़ रहा है। फसलों की रोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो रही है। विषैले तत्व शरीर में आने के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो गई है। परिणामस्वरूप, मनुष्य के जीवन में दुख, अशान्ति और तनाव बढ़ता जा रहा है। इस क्षेत्र के जानकारों का कहना है कि भारत में रहने वाले हर व्यक्ति के पेट में लगभग एक मिलीग्राम डी.डी.टी. और बी.एच.सी.जैसी कीटनाशक दवाइयों का अंश जाता है। इसके परिणाम से ब्रेन और किडनी जैसे नाजुक अवयवों में बड़े पैमाने पर विकृतियाँ बढ़ रही हैं। कैन्सर जैसी बीमारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। हैदराबाद स्थित एक हॉस्पिटल में प्रसूति वार्ड से यह स्पष्ट हुआ है कि अकाले प्रसूति और गर्भ में भ्रूण की मौत का सम्बन्ध जहरीले कीटनाशकों से है। ऐसी माताओं के खून में डी.डी.टी.और बी.एच.सी.की मात्रा ज्यादा पाई गई। समय की पुकार है कि यौगिक प्रक्रिया को समझ कर, शाश्वत यौगिक खेती का प्रयोग करें।

## योग का प्रयोग

इसी लक्ष्य से ग्रेटर नोएडा में 25 एकड़ जमीन पर यौगिक-ऑर्गेनिक खेती का एक प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। सारी जमीन पर देशी गाय के गोबर की खाद और गहरी जुताई कर के खेतों को तैयार किया गया। भारत सरकार के कृषि सम्बन्धित उच्चतम पूसा इंस्टिट्यूट से गेहूँ के बीज लेकर उन्हें शुद्ध-पवित्र व शक्तिशाली योग प्रकंपनों से जार्च किया गया। बीज बुवाई के बाद, बीज के अंकुरित होने के समय, बौधे के बढ़ने के समय, फसल में अनाज भरने के समय से लेकर अनाज निकलने तक परमात्म पवित्रता व प्रेम के प्रकम्पनों से पूरी खेती के चारों और कवच के रूप में शक्तिशाली आभामण्डल बनाया गया। यह प्रयोग प्रतिदिन एक समय, एक जगह पर बैठकर एक विधि से किया गया। योगयुक्त अवस्था द्वारा स्नेह से फसल को दृष्टि से निहाल किया गया। जमीन से माँ का रिश्ता जोड़कर प्यार से पालना की गई। प्रतिदिन 15 से 20 भाई-बहनें खेत पर जाकर राजयोग के माध्यम से परमात्म शक्ति लेकर फसलों को देते रहे ताकि प्रकृति को स्नेह युक्त शुभभावना का दान मिल सके एवं फसल उन्नत व स्वाथ्यवर्धक भी हो।

इस खेती में किसी भी कैमिकल या कीटनाशक का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया गया है। आप सभी को बताते हुए हर्ष हो रहा है कि शुद्ध भूजल, बीजामृत और राजयोग की अनूठी शक्ति से 2000 क्विंटल से अधिक गेहूँ का उत्पादन

**शेष भाग पृष्ठ 22 पर**

# लॉकडॉउन - शरीर और मन का

■■■ ब्रह्माकुमार रवि, एवरहैल्दी होस्पिटल, शान्तिवन

कोरोना वायरस पूरे विश्व में महामारी की तरह फ़ैल रहा है। हर रोज समाचार मिलते हैं कि लाखों लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं और मृत्यु को भी प्राप्त हो रहे हैं। इससे सुरक्षा के लिये सरकार ने जो लॉकडॉउन लगाया था, उसका पालन करने से क्या हम पूर्ण सुरक्षित हुए? नहीं ! हमें अपने मन का लॉकडॉउन करने की भी आवश्यकता है। मन का लॉकडॉउन क्या है और इसे कैसे लगा सकते हैं?

मन का लॉकडॉउन अर्थात् मन को बाह्यमुखता से अंतर्मुखता की ओर ले जाना है। बाहर की स्थूल वस्तु, वैभव, मान, अपमान इत्यादि में भटकते चंचल मन को समेट कर अपने घर परमधाम में रहने का अभ्यास करना है। अपनी यथार्थ आत्मिक स्थिति में स्थित रहने की आवश्यकता है।

जैसे हम सोशल डिस्टेंसिंग (एक दूसरे में दूरी) का पालन कर रहे हैं, ऐसे ही मनमुटाव, ईर्ष्या, द्वेष, वैर आदि से भी दूरी बनाकर रखें और आपसी संबंधों में स्वछता लाएँ। हम सभी रूहानी भाई-भाई आपस में स्वच्छ रूहानी प्यार बढ़ाएँ।

स्थूल रूप से हम हर चीज की सफाई करते रहते हैं ताकि कोई मैल वा गंदगी ना बचे। ऐसे ही ज्ञान रूपी जल से और दिव्य बुद्धि रूपी साबुन से मन की सफाई करनी है ताकि अपवित्रता रूपी गंदगी निकल जाए और आत्मा पवित्र बन जाए। आत्मा के पवित्र बनने से उसकी नेगेटिविटी, कमी-कमजोरियां, विकार आदि सब निकल जाएंगे और दैवी गुण, विशेषताएं अपने आप भर जायेंगे।

बीमारी से सुरक्षा के लिये हम सभी मास्क पहनकर रखते हैं ताकि वायरस का प्रभाव ना हो। जब हम मास्क पहने हुए व्यक्ति को देखते हैं तो हमें उसका मस्तक और नयन ही नजर आते हैं, ना कोई जाति, ना धर्म नजर आता है। मस्तक आत्मा का सिंहासन स्थान है। इससे प्रतीत होता है कि हम सब एक समान हैं। इस स्थूल मास्क के साथ एक सूक्ष्म मास्क भी पहनें कि जो बातें हमारे लिए जरूरी हैं उन्हीं को अंदर लें ताकि मन व्यर्थ बातों से मुक्त रहे और अंर्तमुखता का सही रूप से पालन हो। स्थूल लॉकडॉउन तो हट चुका है लेकिन मन के लॉकडॉउन को निरंतर जारी रखने की आश्यकता है।

कोरोना प्रभावितों को बचाने के लिए सरकार पूरी कोशिश कर रही है। पुलिस और डॉक्टरों की फौज अपनी जान को जोखिम में डालकर पूरी मेहनत कर रही है। ऐसे में हम रूहानी फौज या रूहानी डॉक्टर्स का क्या कर्तव्य है? भयभीत आत्माओं को धैर्य प्रदान करना, अनिच्छित स्थिति में उलझे हुए लोगों को सुनिश्चित स्थिति प्रदान करना, अशांत आत्माओं को शान्ति प्रदान करना, जो शरीर से मुक्त हुए हैं उनको शांति प्रदान करना, उनके परिजनों को शक्ति देना आदि-आदि।

कोरोना वायरस जब संक्रमित होता है तो जाति, धर्म, देश, राजा, प्रजा, मंत्री, एक्टर, सिंगर, धनी, गरीब आदि में कोई भेद नहीं करता है तो फिर हम क्यों इन सब भेदों में रहते हैं! आओ हम सब मिलकर इस बीमारी से लड़ने के लिए आगे बढ़ें।

कोरोना वायरस इतना छोटा है कि एक पेन से लगाई गई बिंदी में लाखों होते हैं। इतने सूक्ष्म वायरस ने आज पूरे विश्व को हलचल में ला दिया है। यदि इतनी छोटी-सी चीज में पूरी दुनिया को हिलाने की ताकत है तो क्या हम सब सूक्ष्म से सूक्ष्म आत्मा में इतनी शक्ति नहीं है जो पूरी दुनिया को परिवर्तित कर स्वर्ग बना सकें। जरूरत है तो बस हमें अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित रहने की और पूरे विश्व में बाबा की शक्तियों को फैलाने की । ■■■

# क्षमा-याचना से होगा इलाज संभव

■■■ ब्रह्माकुमार विशाल जैन, कीर्तिनगर, अकोला, महाराष्ट्र

आज सारे विश्व में कोरोना बीमारी के कारण हाहाकार मचा हुआ है। एक ओर जहां अनेक लोग इस बीमारी से मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, दूसरी ओर लाख कोशिशों के बाद भी अभी तक कोई इलाज नहीं मिला है। चिंता बढ़ती जा रही है, जिसके कारण अनेक लोग भगवान से दया, कृपा मांग रहे हैं। मगर तेजी से बढ़ते मामलों ने सोचने को विवश कर दिया है कि शायद ये मामला अभी तक उन पशु-प्राणियों की अदालत में ही है, जिनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। उन के श्राप के कारण ही आज मनुष्यों के लाखों उपाय भी कारगर साबित नहीं हो रहे हैं।

ऐसे में सीधे भगवान से दया मांगना ऐसा ही है, जैसे कि किसी विचाराधीन आरोपी का सीधे राष्ट्रपति से माफी की गुहार करना, तो राष्ट्रपति कार्यालय से यही जवाब आएगा कि अभी तो मामला अदालत में विचाराधीन है, पहले अदालत में अपनी बात रखिए। ठीक इसी प्रकार, प्रकृति ने जिन पशु-प्राणियों को विशेष कारीगरी और विविध रंग-रूप से बनाया, उनका मनुष्यों ने बेरहमी से कत्ल किया, फिर बीच बाजार नुमाइश की, उनके श्राप का ही परिणाम है ये कोरोना नाम का जहरीला वायरस। इसलिए पहले उन जानवरों की अदालत में क्षमा याचना करनी होगी। यहां हमें यह नहीं सोचना है कि हमने तो किसी पशु को नहीं मारा है, फिर हम क्यों क्षमा मांगें? नहीं, यह प्रकरण कुछ ऐसा ही है, जैसे परिवार में किसी नादान से गलती होने पर बड़े कहते हैं, उसकी ओर से मैं माफी मांगता हूँ। हमें भी उन हत्यारों की ओर से माफी मांगनी है। फिर जाना होगा धरती माता के पास क्योंकि धरती सिर्फ मानवों की ही माता नहीं है परंतु सभी जानवरों और पक्षियों की भी माता है, सभी उनके आंचल में पलते हैं। धरती मां की छाती पर ही उसके बच्चों को मारा गया है, तो विचार कीजिये एक माँ का कलेजा कैसे फटा होगा?

तो आइए, हम अपने योगाभ्यास में, उन प्राणियों की आत्माओं से समस्त मानवता के लिए क्षमा दान लें। सर्वप्रथम उन प्राणियों की आत्माओं को बुध्दि रूपी पटल पर इमर्ज करें और संकल्प करें... हे पशु-प्राणियों की आत्माओ, आप कितने सुंदर हो, प्रकृति ने आपको अलग-अलग रूप-रंग दिए हैं, किसी का छोटा शरीर है, किसी का बड़ा तो किसी का लंबा, किसी के पंख रंगीले हैं.... वाह आपके विभिन्न रूपों को निहारते जी नहीं भरता परंतु हे पशु-प्राणियो, हमारे ही कुछ भाईयों ने दयाभाव को छोड़कर और आपके मूक स्वभाव का गलत फायदा उठाकर आपके प्राण हर लिए, आप पर अनेक जुल्म किए।

हम जानते हैं, आप बेवजह किसी को कभी तंग नहीं करते परंतु इन्होंने आपको मारा है, हम आपके दुख और भय को सिर्फ महसूस कर सकते हैं, हम आपसे क्षमा मांगने आए हैं, कृपया आप हमें बड़े दिल से क्षमादान दें। हम आपको यह खुशखबरी भी देते हैं कि अब धरती पर स्वयं परमपिता परमात्मा आ चुके हैं नई सतयुगी सृष्टि की पुन:स्थापना करने, अब जल्दी ही वह दुनिया आने वाली है जिसमें आपको कोई कष्ट नहीं होगा, आप मुक्त विचरण करेंगे।

अभी हम उस दुनिया को बनाने के लिए परमात्मा पिता के मददगार हैं अत: आप थोड़ा धीरज धरें और कृपया क्षमा करें (पशुओं की आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करें)।

अब हम चलें धरती माता के सामने, संकल्प करें, हे धरती माता, आपके विशाल हृदय का कोई पारावार

नहीं, आपने सतयुग से लेकर हमारी पालना की है और अब भी कर रही हो, आप हमसे कोई अपेक्षा नहीं रखती हो। हे माते, आपके अनगिनत उपकारों का बदला हम अपना सर्वस्व देकर भी नहीं चुका सकते। माता, अभी विश्व पर संकट आया हुआ है। हमारे कुछ निष्ठुर भाईयों ने आपके पशु रूपी बच्चों की अपनी जिव्हा के लिए बेरहमी से हत्या की है जिस कारण पशुओं के अंदर का जहरीला वायरस मनुष्यों में आ गया है और मनुष्यों की जानें जा रही हैं। हम समझ सकते हैं माता, बच्चों को मरता हुआ देख आपके दिल पर क्या गुजरी होगी, आपको कितना दुख हुआ होगा लेकिन माते आप हमें क्षमा नहीं करेंगी तो हम कहां जाएंगे?

माता, हम आपसे वायदा करते हैं कि प्रभु के नई दुनिया की स्थापना के कार्य में तन-मन-धन से मददगार बन हम जल्दी ही आपको स्वर्ग बना देंगे मगर अभी इस ईश्वरीय कार्य के पूरा होने तक आपको हमें क्षमा करना होगा (दिल से धरती मां को नमन करें)।

आओ अब चलें अपने प्रभु पिता के पास.. बाबा, आप तो जानीजाननहार हो, सब कुछ जानते हो, आज दुनिया में अनेक देशों में कोरोना की महामारी का कहर टूट पड़ा है, बाबा, आप मनुष्यों की मदद से ही नई दुनिया बनाते हो मगर आपकी ही ये रचना आज कितनी भयभीत हो रही है, ये भयग्रस्त आत्माएं भला कैसे आपके दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनेंगी? बाबा, पशुओं और धरती माता से आपही हमें क्षमादान दिला सकते हैं क्योंकि जब तक ये माफ नहीं करेंगे, मनुष्यों के कोई उपाय सफल नहीं होंगे और इस बीमारी का इलाज नहीं मिलेगा।

बापदादा दृष्टि देते हुए इशारा दे रहे हैं, बच्चे, अब आप गफलत न करके जल्दी ही अपने विकर्मों का नाश करो, जिससे दुनिया के परिवर्तन का कार्य तीव्र गति से पूरा हो, आपके लिए ही ये कार्य रुका हुआ है (बाबा से दिल ही दिल में सच्चा वायदा करें)। अब देखें, बापदादा के नैनों से विश्व गोले की ओर लाइट का फाउंटेन जा रहा है जिससे दुखी पशुओं और मनुष्य आत्माओं को राहत मिल रही है, धरती के पाँच तत्व भी अपनी ताकत पुन: प्राप्त कर रहे हैं। फिर ये लाइट का फाउंटेन प्रयोगशालाओं में जा रहा है, जहां वैज्ञानिक दवाई बनाने में लगे हुए हैं, उनके मन में सही विचार क्लिक हो रहे हैं। अंत में बापदादा को धन्यवाद करते हुए वापस लौट आएं। ■■■

पृष्ठ 18 का शेष भाग

और रीति अर्थात् परहित व सद्कार्य में खर्च करें। संसार के किसी भी धर्म ने यह नहीं कहा गया है कि धन न कमाएँ, धन जरूर कमायें परन्तु उसके दोषों से दूरी बनाए रखें।

कहते हैं, जिसके पास धन नहीं है, वह निर्धन नहीं है परन्तु जो धन के पीछे भागता ही रहता है, वह असली निर्धन है। जो सबसे ज्यादा पाता है वह धनी नहीं है, जो सबसे ज्यादा देता है, वह धनी है। धन से इतना भी न जुड़ जाएँ कि हर क्रिया भोग में बदल जाए और परिणाम उसका यह निकले कि हमारी खुशी ही गायब हो जाए। ■■■

पृष्ठ 19 का शेष भाग

हुआ। इसकी लागत भी अन्य रासायनिक खाद वाले अनाज की तुलना में बहुत कम है।

यौगिक खेती कोई अज्ञान, अंधश्रद्धा की बात नहीं है। योग प्रक्रिया सम्पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। खेती का कोई भी कार्य जैसे खाद मिलाना, पानी देना, घास-फूस निकालना आदि आत्मिक स्वरूप में रहकर करने से कार्यक्षमता बढ़ती है एवं योग के चमत्कारी परिणाम स्वयं प्रत्यक्ष हो जाते हैं। सम्पूर्ण वायुमण्डल शुद्ध व पवित्र हो जाता है। ■■■

# मिली ऊपर वाले की सही पहचान

ब्रह्माकुमार गोयत, फरीदाबाद

मेरा जन्म एक किसान परिवार में हरियाणा के हिसार जिले में हुआ। सन् 1975 में कस्टम विभाग में इन्स्पेक्टर के रूप में मेरी नौकरी फरीदाबाद में लगी। सन् 1985 में मैंने एक बना-बनाया मकान खरीदा। जिस प्रोपर्टी डीलर (भ्राता जगदीश दुआ) ने मकान दिलवाया वह बहुत भला और नेक नियत वाला लगा। वह भाई अपनी सफेद कमीज की जेब पर एक बैज लगाये रखता था। एक दिन मैंने पूछा, 'भाई, आपने ये क्या लगा रखा है?' उसने बताया, 'ये शिवबाबा है।' मैंने कहा, 'ये शिवबाब कौन है?' उसने कहा, 'ये परमात्मा हैं और राजस्थान में आबू पर्वत पर एक बूढ़े ब्राह्मण के शरीर में प्रवेश होकर नई दुनिया बनाने के लिए पढ़ाते हैं।' मैंने पूछा, 'कहाँ से आते हैं?' भाई ने कहा, 'शिवलोक से, ऊपर से आते हैं।' मुझे कुछ समझ में नहीं आया क्योंकि सुनने में तो यही आता था कि भगवान हर जगह है, पत्ते-पत्ते में भी है और वह भाई कह रहे थे कि ऊपर से आते हैं।

### कुम्भकरण ने पहली करवट ली

तभी मुझे हाली (हल चलाने वाला) की एक बात याद आई। हरियाणा में हल चलाते समय किसान बैलों को कहता है, 'लो भई ऊपर वाले का नाम।' किसी से कहावत सुनी थी, 'अनपढ़ जाट पढ़े बराबर-पढ़ा हुआ जाट खुदा बराबर।' मुझे ख्याल आया कि यह भाई भगवान के ऊपर से आने की ही तो बात कह रहा है। मेरे अन्दर के कुम्भकरण ने थोड़ी करवट बदली। फिर मैंने कहा, अच्छा, आबू में जहाँ शिवबाबा आते हैं मुझे वहाँ ले चलो। सन् 1987 में एक दिन उस भाई ने कहा, माउण्ट आबू में एक राजयोग शिविर लग रहा है, आप चलेंगे? मैंने झट हाँ कर दी और अपने महकमे के एक अन्य इन्स्पेक्टर को भी साथ चलने के लिए राजी कर लिया।

तकरीबन 60-70 लोगों के ग्रुप में हम दो जने भी शामिल होकर चल पड़े और राजस्थान के सिरोही जिले में आबू पहाड़ पर अगले दिन सुबह पाँच बजे पहुँच गये। थोड़ी-सी देर बाद विद्यालय के मुख्य परिसर पाण्डव भवन में पहुँच गये जहाँ बड़ी शान्ति और स्वच्छता का अहसास हुआ। पाण्डव भवन के नजदीक एक दूसरी सुन्दर इमारत है जिसका नाम है ज्ञान-विज्ञान भवन, हमें रहने का कमरा वहाँ दिया गया। एक बड़े हॉल (ओम शान्ति भवन) में दस बजे हमारा स्वागत सत्र हुआ। तकरीबन 300 लोग शिविर में पहुँचे थे। श्वेत वस्त्रधारिणी बड़ी-बड़ी दादियों से हमारा परिचय कराया गया। उन्होंने हमें आशीर्वचन कहे। शिविर दोपहर तक चला। फिर भोलानाथ के भण्डारे में भोजन किया। कितना सात्विक भोजन! भोजन परोसने वाले भाई-बहनें इतने साफ-सुथरे विचारों वाले थे कि क्या वर्णन किया जाये! बाहर की दुनिया में या अपने घर पर भी कभी इतना निर्मल स्नेह और अपनापन हमने नहीं पाया। हमें लगा कि हम स्वर्ग में पहुँच गये हैं। रात्रि आठ बजे तक हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय की आध्यात्मिक शिक्षाओं से वाकिफ होते रहे और रात्रि भोजन के बाद दूर तक फैली सुन्दर नक्की लेक तक घूम कर सो गये।

### अन्दर सोये कुम्भकरण ने दूसरी करवट ली

अगली सुबह 3.30 बजे एक गीत की आवाज सुनी, 'अमृतवेला शुद्ध पवन है, मेरे लाडलो जागो।' गीत इतना सुन्दर और सुहावना था कि क्या कहा जाये! मन में ख्याल आया कि लाडले कहने वाला कौन है? हम हाथ-मुँह धोकर चाय-पानी लेने भण्डारे

में पहुँचे। रास्ते में देखा कि छोटे-छोटे सभागारों में श्वेत वस्त्र पहने, एक तरफ भाई और एक तरफ बहनें शान्त मुद्रा में बैठे हैं। ऐसा लगा जैसे हम प्राचीन ऋषि-मुनियों के आश्रम में पहुँच गये हैं। थोड़ी देर में एक और गीत सारे प्रांगण में गूँजने लगा –

'शान्ति की एक चिड़िया आई, लेकर एक संदेश रे,
क्यों फँसे प्राणी यहाँ, क्यों भूले अपना देश रे?'

इस जन्म में इस तरह के गीत हमने कभी नहीं सुने थे। वहाँ रहते हम बाहर की दुनिया, अखबार, टी.वी.आदि सब भूल गये। आत्मा, परमात्मा, तीन लोक और पुनर्जन्म के विषय में हमें बहुत गहराई से समझाया गया।

### फिर जैसे थे वैसे ही हो गए

शिविर की समाप्ति पर हम अपने-अपने स्थानों पर लौट आये। कुछ दिन तक तो उन बातों का असर रहा, फिर जैसे थे वैसे ही हो गये। दो वर्ष गुजर गये उस यात्रा को। जो भाई माउण्ट आबू ले गया था वह बीच-बीच में मिलता रहा और प्रेरित करता रहा कि गोयत भाई, सात दिन का कोर्स कर लो। मैं उस भाई को यह कह कर टाल देता था कि भैया, जब आपके सबसे बड़े स्थान माउण्ट आबू ही हो आये तो अब और कोर्स क्या रह गया?

### माँग लिए सात दिन

कहते हैं, समय से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता। मुझे भी समय पर ही सब मिलना था। नौकरी तो मैं कर रहा था लेकिन मन में ऐसे-ऐसे ख्यालात आते थे कि नौकरी छोड़ कर हरिद्वार चला जाऊँ। कभी-कभी सोचता था कि गाँव में जाकर खेती कर लूँ। उन दिनों हमारे गाँवों में अंगूर की खेती कुछ लोग करने लगे थे। मैंने एक महीने की छुट्टी ले ली और सोचा कि गाँव में जाकर पता लगाऊँ कि अंगूर की खेती कैसी है। एक महीने की छुट्टी लेने की यह बात मैंने उस ब्र.कु.भाई को बता दी जो मुझे माउण्ट आबू ले गया था। उसने झट कहा, अच्छा, एक महीने की छुट्टी ली है, अब सात दिन मुझे दे दीजिए, फिर गाँव जाकर अंगूर की खेती कर लीजिए। मुझसे ना नहीं कहा गया।

### चले कोर्स करने को

अगले दिन मैं कोर्स के लिये पहुँच गया। कोर्स कराने वाली बहन को मैं पहले से ही जानता था। उसने पहले मेरे मस्तक में तकरीबन एक मिनट तक देखा। मुझे ऐसा लगा मानो किसी ने मन में स्नेह और मिठास का रस घोल दिया है।

### कुम्भकरण जाग उठा

मैं निरन्तर दस दिनों तक सही समय पर कोर्स करने जाता रहा। दिन प्रतिदिन मुझे ज्ञान के गुह्य रहस्यों का पता लगता गया। दिल में खुशी अनुभव होने लगी। मुझे लगने लगा कि मैं एक अनोखी और अलौकिक शक्ति से बहुत जल्दी मिलने वाला हूँ। पहले तो यही सोचा था कि आठ-दस दिन का कोर्स पूरा करके फिर अंगूर की खेती का पता लगाऊँगा। कोर्स पूरा हुआ तो मैंने कहा, अच्छा बहन जी, अब जाऊँ अपने गाँव? बहन बोली, 'भैया, यहाँ पड़ोस में सच्ची गीता पाठशाला है, हम दोनों (युगल सहित) वहाँ सुबह 6 बजे से 7.30 तक होते हैं, वहाँ शिवबाबा की मुरली सुनाई जाती है, आप आकर के देख लो।' मैंने सोचा, चलो एक-दो दिन वहाँ भी जाकर देख लें।

### बाँह पकड़ कढ़ लीनो

शास्त्रों में कहीं लिखा है, बाँह पकड़ कढ़ लीनो यानि कि भगवान ने खुद बाँह पकड़ कर अपनी तरफ कर लिया, मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैं अगली सुबह छह बजे काला ट्रैक सूट पहने हिचकता-हिचकता कमरे में जाकर बैठ गया जहाँ मध्यम लाल प्रकाश फैला हुआ था। एक भाई सन्दली पर बैठा था। फिर 6.30 बजे सफेद लाइट हो गयी और सन्दली पर बैठा हुआ भाई मुरली पढ़ने लगा – 'ओम शान्ति, मीठे बच्चो, तुम शरीर नहीं, आत्मा हो। एक शरीर छोड़ दूसरा लेते रहते हो। अब अन्तिम जन्म है। मैं शिव

तुम्हें भक्ति का फल देने आया हूँ। मैं तुम्हारे लिये बहिश्त की सौगात लेकर आया हूँ।.....' मुरली क्या थी? बात मत पूछो। उसमें ईश्वरीय जादू भरा था। ठीक 7.30 बजे मुरली खत्म हुई और मैं अपने दुनियावी घर की तरफ चल पड़ा लेकिन पैर जमीन पर नहीं थे, जैसे उड़ता जा रहा था। शिव बाबा की पहली वाणी सुनते ही मुझे पक्का निश्चय हो गया कि ये किसी देहधारी मनुष्य, किसी बाबा, फकीर या मौलवी के बोल नहीं। यह तो खुद खुदा (भगवान) आ गया है, वो भी ऊपर से। बस, फैसला हुआ कि कल फिर से इसी गीता पाठशाला में आना है।

### अपने से मुलाकात

गीता पाठशाला में 5-6 दिन तक क्लास किया। एक शनिवार को क्लास के बाद बताया गया कि कल की क्लास बड़े सेन्टर एन.आई.टी. नम्बर वन सेक्टर में होगी। मैं वहाँ भी पहुँच गया और मुरली सुनी। क्लास खत्म होने के बाद सभी भाई-बहनें धीरे-धीरे उठकर जाने लगे परन्तु मैं तो वहीं रह गया। बाबा ने ऐसी दिव्यदृष्टि दी कि मैं प्रेम के गहरे सागर में डूब गया और मेरी मुलाकात मेरे से ही हो गयी। मैं इस देह से ऐसे अलग हो गया जैसे कोई मर जाता है। मस्तक में, भ्रकुटि में मैंने खुद को बैठे हुए देखा। ऐसा लगा कि बस इसी अनुभव में खोया रहूँ। बड़ी बहन, जो क्लास करा रही थी, की नजर मेरे ऊपर पड़ी। वे बोली, क्या हुआ आपको? आप कहाँ से आये हैं? कुछ सेकण्ड तक तो मेरे से बोला नहीं गया। फिर कहा, बहन जी, सेक्टर-16 से आया हूँ। लगता है शिवबाबा मेरे ऊपर बहुत मेहरबान हो गये हैं, मैं आसमान में उड़ रहा हूँ।

### बाबा ने हिलाई खटिया

एक बार बाबा की मुरली में आया, मीठे बच्चे, अमृतवेला मेरे से करीब से मिलने की वेला है। अगर रात को बाबा को टाइम बता कर सो जायेंगे तो सुबह ठीक उसी समय बाबा जगाने आयेगा। मैंने सोचा, ट्रायल करके देखते हैं। रात को सोते समय मैंने कहा, बाबा, मुझे तीन बजे सुबह जगा देना। अगली सुबह तीन बजे खटिया हिलने लगी। कोई चोर घर में घुस आये या भूकम्प में खटिया हिले, वो बात और होती है। खटिया ऐसे हिल रही थी जैसे माँ, दूध पीते बच्चे का झूला झुलाती है। इतना मातृ-तुल्य स्नेह। मैं गद्‌गद् हो गया। उठकर घड़ी देखी तो पूरे तीन बजे थे। एक बात और – तीन बार तकिये से सिर उठाया और रखा, जगाने का इतना पक्का प्रोग्राम। मैं धन्य हो गया। भगवान ने मेरा इतना ख्याल किया। वाह! भगवान बाबा वाह! तेरी लीला अपरम्पार! मैंने कमरे से बाहर जाती हुई रूई जैसी सफेद आकृति भी आँखों से ओझल होती हुई देखी।

### परमधाम का दीदार

उस दिन हाथ-मुँह धोकर बहुत खुशी से योग में बैठ गया। वाह! जी वाह! भगवान हमारे पर इतना खुश कि बैठते ही मुझे शरीर से अलग कर लिया और मैं उड़ता गया, उड़ता गया। सूर्य, चाँद और सितारों से पार सूक्ष्म लोक में ब्रह्मा बाबा को नमस्कार करते हुए परमधाम पहुँच गया। रास्ते में मैंने सूरज-चाँद और सितारों की खुरदुरी सतह भी देखी। ऊपर पहुँच कर आत्माओं की दुनिया में ढेर सारी आत्माएँ देखी। फिर बाबा ने मुझे नीचे की दुनिया, जहाँ मैं रह रहा था, वह दिखाई। छोटा-सा भारत देश, उसमें फरीदाबाद शहर, शहर के एक घर के ऊपर बना हुआ चौबारा, उसमें एक चौकी पर मैं बैठा योग कर रहा था, आलथी-पालथी लगाये। मेरा शरीर यहाँ धरती पर था और मैं परमधाम में बाबा के घर में। थोड़ी देर के लिए जैसे मैं कर्मातीत स्टेज में पहुँच गया। मेरा मन किया कि बस यहाँ ही रह जाऊँ बाबा के रूहानी गाँव में लेकिन बाबा ने मुझे अनुभव कराया कि बच्चे अभी तो तुम्हें बहुत सेवा करनी है और झट मुझे स्थूल शरीर में वापस भेज दिया।

तब से, 30 वर्ष से अधिक समय हो चुका है युगल सहित ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। बच्चे पूर्ण सहयोगी हैं। नौकरी से इस्तिफा भी ज्ञान में आते ही दे दिया था और निरन्तर प्यारे बाबा की याद और सेवा में तत्पर हूँ। शुक्रिया मेरे प्राणनाथ शिवबाबा। शुक्रिया। ■■■

# एक पत्र, पुत्र के नाम

ब्रह्माकुमारी ललिता, विकासपुरी, नई दिल्ली

**प्रिय पुत्र,**

आज मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत दिन था। आज तुम अपनी पहली तनख्वाह लाये। कितने प्रसन्न थे तुम। तुम्हारे चेहरे की चमक ने मेरे बूढ़े चेहरे की झुर्रियों में अनगिनत इंद्रधनुषी रंग भर डाले।

याद है, कितनी मन्नतें माँगी थी, आज के दिन के स्वागत की प्रतिक्षा में; कितनी रातें हम दोनों ने मिलकर जागते बितायीं थीं; तुम रात-रात भर पढ़ते रहते और मैं बेबस-सी बस तुम्हें बार-बार देखने आ जाती थी। कितना झल्लाते थे तुम! तुम्हारे ज्यादातर दोस्तों की नौकरियाँ लग गई थीं। लोग हमसे कटने लग गए थे। कहीं न कहीं शायद हम दोनों ही लोगों से कन्नी काटने लगे थे। मुझे मालूम है, वो तुम्हारी हँसी आँसुओं के फाहे से भीगी पड़ी थी। जानती हूँ, तुमने भी मेरी गीली आँखों की नमी अपने कोमल दिल पर ओस की बूँद की तरह महसूस की होगी। तुमने ज्यादा नमक वाले खाने पर चिल्लाना बन्द कर दिया था और मैंने भी तुम्हें वॉट्स एप्प पर प्रेरणादायक मैसेज भेजने कम कर दिए थे। हमने एक-दूसरे से कभी इन सबका कारण नहीं पूछा। बस दुआओं, प्रार्थनाओं का पुल-सा हम दोनों के बीच बनता चला गया। शब्द कम हो गए और दुआएँ बोलने लगी।

तुम्हारी परीक्षा का परिणाम आया और मैंने तुम्हें खुश होने की अनुमति भी नहीं दी। इससे पहले भी कई बार तुमने लिखित परीक्षा पास कर ली थी लेकिन कभी मेडिकल, कभी आरक्षण...कभी कुछ, कभी कुछ और कभी कुछ। अपनी मंजिल तक आते-आते कैसे तुम पीछे धकेल दिए जाते रहे।

तुम्हारी असफलताओं ने तुम्हें अनुशासित तरीके से पढ़ना सिखाया; खुद पर, सिर्फ खुद पर विश्वास करना सिखाया। तुम कमजोरी में भी मजबूत होते चले गए। प्रश्नों के उत्तरों के लिए अब तुम एक क्षण के लिए भी इधर-उधर नहीं ताकते थे। तुम्हारा ज्ञान, जागरूकता चरम सीमा पर पहुँच रही थी। तुम एक ही वाक्य में गहरी बात कह डालते थे और मैं अवाक् तुम्हें देखती रह जाती। कई बार तुम ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग करते कि मेरा सिर ऊँचा हो उठता कि मैंने वे कभी सुने भी नहीं थे। कितनी गहराई से तुमने हर विषय को पकड़ लिया था; अब तुम घड़ी देख 10 बजे रात को सोने लग गए थे; चेहरा उठान ले रहा था। कितनी सहजता से तुम के.बी.सी.के बहुत-से प्रश्नों के उत्तर दे देते थे। रोमांचित अनुभव कर रही हूँ आज उन यादों के समंदर में गोते लगाते हुए। तुम्हारी मेहनत, तुम्हारे चेहरे का रंग बदल रही थी और याद है, मैं भी सारा दिन जाप करने की बजाए मुस्कराने लगी थी। अब मेरे सजदे में प्रार्थना नहीं, शुकराना था, सिर्फ शुकराना। तुम्हारी मेहनत ने मेरी अर्जी ईश्वर के दरबार में स्वीकृत करवा दी। फाइनल लिस्ट में तुम्हारा नाम देख मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। सीमाहीन प्रसन्नता, हल्का-फुल्का-सा महसूस कर रही थी। सब बेड़ियों से स्वतंत्र। उन्मुक्त आकाश में मेरा नन्हा-सा दिल ऊँची-ऊँची उड़ानें भर रहा था।

आज तुम्हारी तनख्वाह का चेक देख कर लगा कि अभी भी खुशी अधूरी है। आज भी तुम्हें नाचने-कूदने का अधिकार नहीं, बेटा। अभी तो तुम सीढ़ी चढ़ मैदान में पहुँचे हो। कितने विश्वास से सरकार ने तुम्हें इस मैदान की सफाई का काम सौंपा है। तुम्हारी वास्तविक परीक्षा तो अब आरंभ हुई है। अपने अनुशासन, ईमानदारी, समर्पण, तपस्या के सबक को

**शेष भाग पृष्ठ 31 पर**

# धैर्य का फल मीठा

■■■ ब्रह्माकुमार अशोक पंडित, शान्तिवन

परिवार और समाज में रहते हुए आपसी सम्बन्धों के बीच कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जब पूछा जाता है कि यह सब कैसे हुआ, तो पता चलता है कि बातें बहुत छोटी थीं लेकिन उनको सही तरीके से न समझने के कारण धैर्य खो दिया और परिणाम यहाँ तक ले आया। धैर्य मनुष्य के व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने वाला उत्तम गुण है। किसी भी पेड़ में जबरदस्त धैर्य होता है तभी वह एक जगह खड़ा रहकर हर मौसम को झेलता हुआ भी मीठे फल देता है। नदियों में भी बहुत धैर्य होता है, तभी तो वे हजारों किलोमीटर तक चलकर अपने लक्ष्य अर्थात् सागर को प्राप्त कर लेती हैं। जब पेड़-नदी आदि प्राकृतिक चीजों में इतना धैर्य होता है तो ईश्वर की बनाई सर्वोत्तम कृति हम मनुष्यों में भी धैर्य कूट-कूट कर भरा होना चाहिए।

### धैर्य से आती है समरसता

धैर्य शब्द है बहुत छोटा लेकिन बहुत ही हितकारी है। पारिवारिक, सामाजिक व व्यवहारिक जीवन में धैर्य को अपना लिया जाए तो सम्बन्धों की कड़वाहट, मनमुटाव, दूरियाँ आदि सदा के लिए समाप्त हो, प्रेम, मधुरता और समरसता आ जाती है। धैर्य हमें समझ देता है और सोच-समझ कर किया गया कार्य सफलता का साधन बन जाता है। किसान खेत में बीज बोता है, गेहूँ का बीज बोया तो तीन महीने तक, आम का बीज बोते हैं तो तीन साल तक और नारियल उगाया तो 7 साल तक धैर्य की आवश्यकता होती है। इसके बाद ही फल की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार सच्चाई, ईमानदारी और वफादारी से किए गए कार्यों का फल प्राप्त करने के लिए भी परिश्रम और धैर्य की जरूरत होती है। आज का मनुष्य चाहता है कि छू-मंत्र हो जाए, बिना परिश्रम के ही सब कुछ मिल जाए। अधैर्य असन्तुलित जीवन का परिचायक है। ऐसा जीवन गलत तरीके से सफलता की ओर अग्रसर होता है, जिसके परिणाम भयावह होते हैं।

### व्यक्तित्व का निखार मूल्यों से ही होता है

संगदोष, लोभ-लालच या गलत इच्छाओं के गुलाम होकर सफलता प्राप्त कर भी ली तो बाद में जीवन में निराशा आ जाती है। इस कारण, जिस आशा और विश्वास का सहारा लेकर आगे कदम बढ़ाया था, वे स्वप्न तक ही सिमट कर रह जाते हैं। फिर भी एक अवसर जरूर आता है। यदि व्यक्ति धैर्य बना कर रखे तो अवश्य ही आशा की किरण जीवन में आ जायेगी। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती है। व्यक्तित्व का निखार तभी होता है जब मूल्यों का विकास हो। मूल्यों का विकास संयम धारण करने से होता है। इसके लिए धैर्यवान होना अति आवश्यक है। जैसे किसान जमीन में बोए गए बीज का हर प्रकार से संरक्षण करता है, इसी प्रकार, बुद्धिरूपी धरती में बोए गए धैर्य रूपी गुण के विकास के लिए भी सहनशीलता, आशा, सकारात्मकता आदि गुणों के संरक्षण की जरूरत होती है।

### बातों को पकड़ने से प्रगति रुक जाती है

धैर्य मनुष्य जीवन के लिए वरदान है। जो यह फल खाता है वह सदा आनन्द के झूले में झूलता रहता है। धैर्यवान जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो पाता है, जीवन की हर चुनौती का सामना कर सकता है। एक गीत है, 'धीरज धर मनुवा, तेरे सुख के भरे दिन आयेंगे ...।' परमात्मा पिता हमें धैर्य देते हैं कि सुख के दिन आने ही वाले हैं। जीवन में छोटी-बड़ी घटनायें घटती रहती हैं, तब कोई भी हितैषी यही कहता है कि भाई, धीरज रखो, सब ठीक हो जायेगा। समय को बलवान कहा गया है। हम और आप रुक जाते हैं लेकिन समय किसी के लिए रुकता नहीं है। हम सबको भी समय से सीखना चाहिए। जीवन में जो भी बातें आती हैं, उन्हें पकड़ें नहीं, बातों को पकड़ने से स्वयं की प्रगति रुक जाती है। किसी

**शेष भाग पृष्ठ 31 पर**

**कादमा** - ब्र.कु. वसुधा बहन को कोरोना योद्धा सम्मान प्रदान करते हुए एच.सी.एस. अधिकारी भ्राता मनोज दलाल, हरियाणा राज्य परिवहन महाप्रबंधक भ्राता धनराज कुंडू तथा अन्य।

**सुन्नी (शिमला)** - थानाधिकारी भ्राता भागचंद आजाद को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन। साथ में ब्र.कु. रेवादास भाई।

**सहारनपुर** - कोरोना महामारी के चलते समाज के जरूरतमंद भाई-बहनों को अन्न वितरित करते हुए ब्र.कु. रानी बहन तथा अन्य।

**वाराणसी** - छोटा लालपुर चौकी के कर्मठ जवानों को सम्मानित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.भाई-बहनें।

**झाबुआ** - पिटोल बॉर्डर पर शान्ति का संदेश देती हुई ब्र.कु. जयंती बहन।

**छतरपुर** - पुलिसकर्मियों को सम्मानित करने के बाद ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. बहन।

**कूही (उमरेड)** - स्वच्छता कार्यालय की प्रमुख अधिकारी बहन नलिनी वनवे को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ज्योति बहन।

**दिल्ली (वसंत विहार)** - थानाधिकारी भ्राता रविशंकर का शाल ओढ़ाकर सम्मान करने के बाद ब्र.कु. क्षीरा बहन तथा अन्य समूह चित्र में।

**सूरत (वराछा)** - यौगिक गृहवाटिका के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन हैं विधायक प्रवीण भाई तथा कांति भाई, ब्र.कु. तृप्ति बहन तथा अन्य ।

**अयोध्या (फैजाबाद)** - जिलाधीश भ्राता अनुज कुमार को सम्मानित करती हुई ब्र.कु. शशि बहन। साथ में है ब्र.कु. शीलू बहन।

**दिल्ली (दिलशाद कॉलोनी)** - उपायुक्त भ्राता रानेन कुमार को सम्मानित करती हुई ब्र.कु. तनुजा बहन।

**जालोर** - विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते हुए सहायक जिला वन अधिकारी भ्राता अमित चौहान, ब्र.कु. रंजू बहन तथा अन्य।

**हांसी** - पुलिस अधीक्षक भ्राता लोकेंद्र सिंह को मोमेंटो प्रदान करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।

**कोरबा** - खाद्य सामग्री से भरी कोरोना हेल्प ऑन व्हील गाड़ी को रवाना करती हुई ब्र.कु. रुकमणी बहन।

**भोपाल (गुलमोहर कॉलोनी)** - श्रमिक बहन को राशन तथा अन्य जरूरी सामान वितरित करती हुई ब्र.कु. डॉ. रीना बहन।

**राजकोट (मेहुल नगर)** - पुष्प वर्षा कर पुलिसकर्मियों का सम्मान करती हुई ब्र.कु.चेतना बहन तथा अन्य बहनें।

# पिता के रिक्शा से आई.ए.एस.तक का सफर

■■■ डॉ.श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट, रुड़की

सिर से पैर तक गरीबी में डूबे गोविंद जायसवाल के पिता बनारस की एक निम्नवर्गीय कालोनी में, एक कमरे के मकान में रहते थे और एक राशन की सरकारी दुकान में काम करते थे। दुकान जब बंद हो जाती थी तो रात में बनारस की सड़कों पर रिक्शा चलाते थे। उनके चार बच्चे थे, 3 बेटियाँ और सबसे छोटे बेटे का नाम गोविंद रखा गया था। समय बीतता रहा। पिता ने तीनों बेटियों को सामर्थ्यानुसार पढ़ाया और शादी कर दी। गोविंद बहुत मेधावी था। वे जिस मोहल्ले में रहते थे, उसके बगल में ही एक पॉश कालोनी थी। गोविंद (12 वर्षीय) चूँकि मेधावी था, इसलिए उसकी पॉश कालोनी के एक बच्चे से दोस्ती हो गयी। एक दिन वह उसके घर गया, वहाँ दोस्त के पिताजी मिले। दोस्त के पिताजी ने अपने बेटे से पूछा, ये बच्चा कौन है? दोस्त ने कहा, मेरा दोस्त है। उन्होंने गोविंद से पूछा, पापा क्या करते हैं? गोविंद ने बताया, रिक्शा चलाते हैं। यह सुनते ही दोस्त के पिताजी आग-बबूला हो गये। उन्होंने अपने बेटे को फटकारा, अब यही बचा है? रिक्शे वालों से दोस्ती करोगे? दोस्त चुप होकर रह गया और दोस्त के अमीर पिता ने गोविंद को वहाँ से बेइज्जत करके निकाल दिया।

मासूम गोविंद को यह समझ में ही नहीं आया कि उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? उन्होंने अपने एक रिश्तेदार को यह बात बताई। रिश्तेदार ने कहा कि इस स्थिति से बाहर निकलने का बस एक ही रास्ता है कि तुम आई.ए.एस. बन जाओ लेकिन, 12 साल के बच्चे को यह जानकारी नहीं थी कि आई.ए.एस.क्या होता है? परन्तु उसने ठान लिया कि उसे आई.ए.एस. बनना ही है। उसने पहले इंटर किया फिर गणित से बी.ए.और साथ-साथ यू.पी.एस.सी.की तैयारी करने लगा।

उधर पिता रिक्शा चला कर परिवार पाल रहे थे और बेटे को पढ़ा भी रहे थे। यह वह समय था जब बनारस में 14 घंटे के पॉवर कट लगते थे और उस दौरान सब लोग जनरेटर चलाया करते थे। किराए के जिस छोटे-से कमरे में गोविन्द का परिवार रहता था, उसके इर्द-गिर्द जनरेटर चलते थे और उनका भयंकर शोर तथा धुआँ होता था। ऐसे में गोविन्द सभी खिड़कियाँ-दरवाजे बंद कर अपने कानों में रूई ठूँसकर पढ़ा करते थे।

ग्रेजुएशन के बाद गोविंद दिल्ली के मुखर्जी नगर में यू.पी.एस.सी.की तैयारी के लिए रहने लगे जहाँ उनके इर्द-गिर्द सब लकड़े-लड़कियाँ ऐश करते थे लेकिन गोविंद दिन-रात पढ़ते रहते। घर से पैसे मंगाते नहीं थे। दिल्ली में बच्चों को ट्यूशन रूप में गणित पढ़ाते और उसके बाद 16 घंटे तक अपनी यू.पी.एस. सी. की तैयारी करते।

गोविंद के पास कोचिंग के पैसे नहीं थे। ट्यूशन भी साल में सिर्फ 8 महीने ही मिलते थे। आर्थिक संकट के चलते धीरे-धीरे पिता के सभी रिक्शे बिक गये। एक मात्र जमीन का टुकड़ा था, वह पिताजी ने मजबूरी में बेच दिया। घर में फाका होने लगा। ऐसे में बहनों ने अपने पति व परिवार से छिपा कर के भाई की मदद की।

गोविंद इतिहास और मनोविज्ञान पढ़ रहे थे। मनोविज्ञान की कोचिंग में उनकी दो-तिहाई फीस माफ हो गई। इतिहास की कोचिंग के पैसे न थे, इसलिए उसकी तैयारी खुद की। कठोर परिश्रम से पहले ही प्रयास में गोविंद को यू.पी.एस.सी.की परीक्षा में 48वाँ रैंक मिला और वे आई.ए.एस. हो गये। आजकल गोविंद जायसवाल अरुणाचल प्रदेश में बतौर आई.ए. एस.अधिकारी तैनात हैं। आई.ए.एस. बनने के बाद सबसे पहले उन्होंने पिता के पैर का

इलाज कराया। बनारस में घर बनवाया। माता-पिता आज भी बनारस में रहते हैं। वह रिक्शा आज भी उनके घर में खड़ा है। उनके पिताजी आज भी उस रिक्शा को लेकर निकल पड़ते हैं।

गोविंद पिताजी से कहते हैं, अब रिक्शा रहने दीजिये लेकिन पिताजी नहीं मानते। गोविंद ने कहा, अच्छा, ई-रिक्शा ले लीजिये। पिताजी कहते हैं, ई-रिक्शा तो चला ही न पाऊँगा, यही ठीक है।

क्या इतना खराब काम है रिक्शा चलाना? जिस रिक्शे ने बेटे को आई.ए.एस.बना दिया, वह इतना खराब है क्या? कदापि नहीं।

## पृष्ठ 26 का शेष भाग

भूलना नहीं। इन नैतिक मूल्यों की नींव को कमजोर मत होने देना। कोई भी लालच तुम्हें विचलित न कर पाए। दिल लगा कर इस तनख्वाह के एक-एक पैसे की कीमत अदा करना। कर्म ऐसा हो कि तुम्हें, तुम्हारे बाद भी याद किया जाए। उदाहरण बनना मेरे बच्चे। कीचड़ में कमल की भाँति अपनी खूबसूरती की महक फैलाते रहना। याद रखना, पैसे की चमक मृगतृष्णा है। नजर तो आती है लेकिन है नहीं। अपने उत्तरदायित्व ऐसे निभाना कि रात को हल्के दिल से, मीठी नींद सो सको। पैसा सिर्फ दवाइयों का प्रबंध करता है, स्वास्थ्य की नेमत संतुष्टि से आती है। तुम जमीन पर सख्त कदम गड़ा कर, सतर्कता से दाएँ-बाएँ देखते हुए चलना। चमकीली आँधियाँ कहीं तुम्हारी आँखें न चुँधियाँ दें। सावधान!! इन आँधियों में बहुत-से तहस-नहस हो गए। मेरे बेटे, सहनशीलता और विवेक की ढाल से सदैव खुद को बचाये रखना है। मुझे आशा है कि तुम अपनी हर परीक्षा में सफल होंगे और अपनी माँ का नाम भी रोशन करोगे। एक सपूत जाने कितनी नस्लों पर लगे पुराने कलंक धो डालता है। ऐसा ही सपूत बनने की आशा तुम्हारी माँ तुमसे लगाए बैठी है।

**तुम्हारी माँ** ■■■

## पृष्ठ 27 का शेष भाग

चीज का अभाव जब महसूस होने लगे तो अधैर्य मत बनो। जीवन परमात्मा का दिया हुआ उपहार है। ईश्वरीय उपहार को सुन्दर पुष्प की तरह बनाना है। इसके लिए धैर्य की आवश्यकता है।

एक बार एक साधु महाराज, अपने शिष्यों को लेकर जंगल के रास्ते से जा रहे थे। दोपहर का समय था, कड़ाके की धूप थी, तेज प्यास भी लग रही थी। तभी एक छायादार वृक्ष देखकर वे सभी बैठ गये। साधु ने अपने शिष्य को कहा, पास में एक झरना बह रहा है, वहां जाकर सभी के लिए पानी ले आओ। शिष्य पानी लेने के लिए झरने की तरफ गया लेकिन उसने देखा कि बहुत से जानवर झरने के इकट्ठे हुए जल में विचरण कर रहे हैं जिससे पानी बहुत गंदा हो गया है, पीने योग्य नहीं रहा है। वह बिना पानी लिए ही वापस आ गया। साधु महाराज जी ने पूछा, क्या आपको पानी मिला? शिष्य ने बताया कि कुछ जानवरों की उपस्थिति से पानी बहुत गंदा हो गया है, मैं दूर से नदी से पानी ले आता हूँ। इस पर साधु महाराज ने कहा कि तुम्हें झरने से ही पानी लेकर आना है, नदी काफी दूर है। शिष्य पानी लेने दोबारा झरने के पास गया तो देखा कि जानवर तो वहां नहीं हैं लेकिन पानी अभी भी गंदा है, वह फिर वापस आ गया। साधु महाराज ने पूछा, आप खाली हाथ क्यों आए? शिष्य ने बताया कि अभी भी पानी गंदा है, पीने योग्य नहीं है। कुछ समय बाद साधु महाराज ने कहा, फिर से जाओ, शिष्य फिर पानी लेने गया तो देखा कि झरने का पानी बहुत साफ हो गया है। पानी में जो गंदगी थी वह नीचे बैठ चुकी थी। वह पानी लेकर साधु महाराज के पास आ गया। साधु महाराज ने कहा, झरने का गंदला पानी स्वच्छ हो, उसमें उभरी मिट्टी नीचे बैठे, इसके लिए हमें धैर्य रखना पड़ा पर इस धैर्य का फल मीठा निकला। यदि नदी से पानी लेकर आते तो दूर जाना पड़ता। इसी प्रकार जीवन में कभी-कभी धैर्य रखना अनिवार्य हो जाता है, जल्दबाजी से कई बार सफलता दूर हो जाती है। ■■■

# कोरोना वायरस से आध्यात्मिकता की ओर

■■■ ब्रह्माकुमार संजय हंस, दिल्ली (ओ.आर.सी.)

आज सारा संसार कोरोना वायरस की चपेट से भयभीत है। भारतीय संस्कृति की बहुत सारी मर्यादायें जो पूर्वकाल में सिखाई जाती थी, आज कोरोना काल में मानव पुन: उन्हें जीवन में अपनाने के लिए मजबूर हो रहा है। जैसे मानव के शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होने पर यह वायरस छूने से या पास जाने से संक्रमित कर देता है ऐसे ही आध्यात्मिक शक्ति की कमी होने से मानव एक-दूसरे के नजदीक जाकर के उसकी कमी-कमजोरियों से संक्रमित हो जाता है। इससे संबंधों में नाराजगी, नफरत, नीचा दिखाने की भावना बढ़ती जा रही है और मानव मन एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। कोरोना वायरस से बचने के लिए हम मानव जाति को सहयोग दे रहे हैं, यह बहुत सराहनीय है। इसी प्रकार से मानव-मानव के बीच पनप रहे नफरत, ईर्ष्या, नाराजगी रूपी वायरस को दूर करने के लिए भी हम एक-दूसरे को सहयोग दें, राजयोग के अभ्यास से स्वयं को शक्तिशाली बनाएं ताकि जीवन सुखमय बन सके।

कोरोना वायरस से बचने के लिए हम बार-बार साबुन से हाथ धोते हैं, इसी प्रकार अगर किसी की कमी-कमजोरी रूपी वायरस दिल में छप जाए तो हम ज्ञान चिंतन रूपी साबुन से बार-बार दिल को साफ कर लें। मन में विचार करें कि सबका पार्ट अपना-अपना है, सबके संस्कार अपने-अपने हैं इसलिए हमें सब के पार्ट को साक्षी हो करके देखना है।

कोरोना महामारी के जर्म्स हमारे में प्रवेश ना करें उसके लिए हम मुख पर मास्क पहन कर के अपना बचाव करते हैं, इसी प्रकार से दूसरे के द्वारा बोले गए नकारात्मक शब्द हमारे मन की शांति को खत्म ना कर दें, मन में हलचल पैदा ना कर दें इसके लिए भी हमें ज्ञान और योग का कवच पहनकर रहना है।

जब हम चावल अग्नि पर पकाते हैं तो शुरू में पकते हुए वे एक-दूसरे से लिपटी हुई अवस्था में होते हैं लेकिन जैसे-जैसे पकते जाते हैं, वैसे-वैसे वे अलग-अलग होते जाते हैं। हम सब भी इस संसार में रहते हुए परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव रूपी अग्नि में पक रहे हैं। जो आत्माएँ जीवन में आध्यात्मिकता और परमात्म प्यार को अपना लेती हैं वे इस अग्नि में पकते-पकते धीरे-धीरे उपराम और परिपक्व अवस्था तक पहुंच जाती हैं जहां कोई चिंता और गम नहीं रहता है। तो आइए, हम सब आत्मा रूपी चावल को योग की अग्नि में इस प्रकार पकाए कि उसकी लिपायमान अवस्था खत्म हो जाए।

इस बीमारी के कारण कई लोग अकेलापन महसूस कर रहे हैं। अकेलेपन को दूर करने के लिए किसी का सहारा, प्यार तथा अपनापन तो चाहिए लेकिन यह सहारा ऐसा हो कि जहां जाने में किसी भी प्रकार के वायरस का डर ना हो। वास्तव में ऐसा सहारा तो एक खुदा दोस्त परमपिता परमात्मा शिव का ही है, जो कहते हैं कि बच्चे, जन्म-जन्म से बहुत सूक्ष्म वायरस रूपी बीमारियों के तुम शिकार हो और अंदर से खोखले और कमजोर हो गए हो। अब मुझ से सर्व संबंध जोड़ करके सर्वगुण और शक्तियों से संपन्न बन जाओ। यही एक जीवन है परमपिता परमात्मा का प्यार पाने का, उसमें खो जाने का, उसके गुण और शक्तियों का अनुभव करने का, उसको स्नेह से निहारने का, उससे सर्व संबंधों को जोड़कर के अतींद्रिय सुख में लहराने का, जन्म-जन्म का भाग्य बनाने का और रंक से राजा बनने का। जैसे सूर्य के सामने सभी कीटाणु नष्ट हो जाते हैं वैसे ही ज्ञान सूर्य परमपिता परमात्मा शिव पर मन और बुद्धि को एकाग्र करने से हमारे अंदर जमा जन्म-जन्म के बुरे संस्कार और विकार नष्ट हो जाते हैं। तो आइए, परमात्मा पिता से सर्व संबंध जोड़ कर हम भारत को फिर से 100 प्रतिशत सुख-शांति प्राप्ति के शिखर पर पहुंचाएं। ■■■

# श्रद्धांजली

बापदादा की अति लाडली, अति स्नेही लक्ष्मी माता जी का जन्म हिमाचल के एक छोटे-से गाँव में सन् 1922 में हुआ था। बचपन से ही वे बहुत मिलनसार और धार्मिक प्रवृत्ति की थी। माता जी वर्ष 1971 में जब ज्ञान में आए तो एक धक से लौकिक से नष्टोमोहा होकर भ्राता बी.के. रेवादास (लौकिक पुत्र) के पास शिमला आ गई और जहाँ-जहाँ उनका तबादला होता रहा वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के निमित्त बनी। उन दिनों ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में लोगों में बहुत भ्रांतियां थी जिस कारण लोगों के भड़काने पर इनके युगल ने इन्हें और भ्राता रेवादास को अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया लेकिन माता जी घबराई नहीं और कहती थी कि 'मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई'। उन्हें बाबा पर अटूट निश्चय था।

वे बिलकुल अनपढ़ थी लेकिन जब कभी वे गाँव में जाती और तहसीलदार, वनअधिकारी या बैंक मैनेजर आदि से सेवार्थ मिलना होता तो उन्हें बाबा का परिचय बड़ी स्पष्टता के साथ देती थी। वे कहते थे कि माता जी को बहुत ज्ञान है। माता जी तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित थी। अथक सेवाधारी माताजी कभी शिमला, कभी जालंधर, कभी बिलासपुर सेवाकेन्द्रों पर सेवा करती थी और साल में एक या दो महीने हर हाल में मधुवन टोली विभाग में भी सेवाएँ देती थी। जब 90 वर्ष की आयु पार करने के बाद उन्हें कहते थे कि अब बुजुर्ग लोगों को मधुवन आने की मना की गई है क्योंकि माउंट में ठंडी बहुत बढ़ गई है तो कहती थी, मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। सबका भविष्य बने इस लक्ष्य से अपने परिवार के लोगों को शिवबाबा के नजदीक आने की प्रेरणा देती रहती थी और ब्र.कु.बहन के प्रति भी लौकिक में मान पैदा करती थी। माताजी को मुरली सुनने का बड़ा शौक था, देह छोड़ने के लगभग एक महीने पहले तक माता जी ने कभी क्लास मिस नहीं की। वे 97 साल की आयु तक अपने सारे काम जैसे कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, झाड़ू देना आदि स्वयं किया करती थी। उम्र के हिसाब से उनके हाथ कांपते थे और कभी-कभी चाय बनाते समय थोड़ी चाय उनसे गिर भी जाती थी तो हम उन्हें चाय बनाने के लिए मना करते थे। लेकिन वह हमेशा कहती थी कि थोड़ी ही चाय तो गिरती है, बाकी बची चाय पिला कर तो मैं अपना भाग्य बना सकती हूँ। बाबा गिरी हुई चाय नहीं देखता बल्कि जो पिलाई गई है उसके नंबर देता है। यह उनकी ज्ञान की व्यवहारिक समझ थी। बाबा ने भी एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनका हर कदम पर साथ निभाया।

उनके जीवन का एक दिलचस्प किस्सा यह था कि एक बार वे गम्भीर रूप से बीमार हो गई थी तो उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई, वे बोली कि मेरे जीते जी गाँव में ब्रह्माकुमारी बहनों को बुला कर सबको बाबा का परिचय दो और सारे गाँव वालों को देसी घी का हलवा खिलाओ। बहनों को बुलाया गया, गाँव में प्रोग्राम किया गया, सबको देसी घी का हलवा खिलाया गया और वे ठीक हो गई। कुछ समय बाद फिर बीमार हो गई तो फिर पूछा कि कुछ चाहिए तो बोली कि गाँव में गीता पाठशाला खोली जाए। गीता पाठशाला खोली गई और वे फिर से ठीक हो गई। उसके बाद फिर एक बार बीमार हो गई और पुन: उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई। वे बोली कि कुमारी शकुन्तला बहन (माताजी की

दौत्री) को सफेद साड़ी पहनाई जाए, ब्रह्माकुमारी बनाया जाए। उनकी यह इच्छा पूरी करने के लिए शकुन्तला बहन को मधुवन में समर्पित कराया गया और उनकी यह इच्छा भी पूरी कर दी गई और वे फिर से ठीक हो गई। कुछ समय बाद फिर बीमार हो गई और अबकी बार फिर उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो बोली कि शकुंतला बहन को सेवाकेंद्र खोल कर दिया जाए। उनकी यह इच्छा पूर्ण करने के लिए सुन्नी (शिमला के नजदीक एक सेवास्थान) में जमीन खरीदी गई। भवन का शिलान्यास करने के लिए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शीलू बहन को मधुवन से वर्ष 2016 में सुन्नी बुलाया गया और आश्रम के भवन का निर्माण आरंभ किया गया। इस बीच फिर एक दिन उनकी तबीयत बिगड़ गई तो फिर से अंतिम इच्छा पूछी गई तो बोली कि एक बड़ा प्रोग्राम सुन्नी में करो जिसमें मधुवन से कोई आए और सुन्नी के चारों ओर सबको बाबा का परिचय मिले। उनकी यह इच्छा पूरी की गई। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी उषा बहन को मधुवन से सुन्नी बुलाया गया। बहुत बड़ा कार्यक्रम हुआ और वे फिर से अच्छी हो गई। जब आश्रम का भवन बन कर तैयार होने के कगार पर था तो फिर से बीमार हो गई और पूर्व कि भांति फिर से उनकी इच्छा पूछी गई तो बोली कि भवन के उद्घाटन में हिमाचल प्रदेश की सभी बहनों को बुलाया जाए और उन्हें कुछ न कुछ सौगात भी दी जाए। ड्रामानुसार अक्टूबर, 2017 में मधुवन से उषा बहन, पंजाब ज़ोन के निदेशक भ्राता अमीरचंद जी, मधुवन से भ्राता प्रकाश जी तथा हिमाचल प्रदेश की सभी ब्रह्माकुमारी बहनों को बुला कर तत्कालीन महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश के द्वारा भवन का उद्घाटन कराया गया और माता जी फिर से ठीक हो गई और आश्रम पर ही अपनी अथक सेवाएँ देने लगी।

देह छोड़ने के लगभग तीन महीने पहले फिर से उनकी तबीयत बिगड़ने लगी। हमने एक बार फिर से उनकी अंतिम इच्छा पूछी तो सिर हिला कर बोली कि अब कोई इच्छा बाकी नहीं बची है, मेरे सारे बहाने अब खत्म हो चुके हैं। यह बूढ़ा शरीर भी अब साथ नहीं दे रहा है, मैं अब जा रही हूँ। अंततोगत्वा दिनांक 8 जून, 2020 को अपना सारा हिसाब-किताब चुक्ता करके माताजी बापदादा की गोद में चली गई। ऐसी स्नेही, बापदादा की आज्ञाकारी, वफादार, दिलतख्तनशीन आत्मा को सर्व दैवी परिवार श्रद्धांजली अर्पित करता है।

**ब्रह्माकुमार रेवादास, सुन्नी, हि.प्र.**

**सदस्यता शुल्क :**

**(भारत)** वार्षिक: 120 /- आजीवन : 2,000 /-
**(विदेश)** वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

**शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :**

**'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510**
**(आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

**For Online Subscription:** **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
**Branch Name** : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

**Mobile:** 09414006904, 09414423949, 02974-228125 **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
**मुख्य सम्पादक** - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

**फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :**

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, website : gyanamrit.bkinfo.in

**केंदूझर-** उपजिलापाल बहन सुरंजिका बेहेरा को मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए एक लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. बिंदु बहन।

**संबलपुर-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए आरडीसी भ्राता निरंजन साहू को एक लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. आरती बहन तथा ब्र.कु. ज्योति बहन।

**सागवाड़ा-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए पचपन हजार रुपये का सहयोग उपखंड मजिस्ट्रेट भ्राता राजीव द्विवेदी को सौंपते हुए ब्र.कु. पदमा बहन।

**पानीपत-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए उपायुक्त बहन हेमलता को वित्तिय सहायता प्रदान करते हुए ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. भारत भूषण भाई तथा ब्र.कु. पायल बहन।

**लुधियाना-** कोरोना राहत कोष के लिए उपायुक्त भ्राता प्रदीप कुमार अग्रवाल को एक लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. सरस्वती बहन। साथ में ब्र.कु. सुषमा बहन, ब्र.कु. गुरप्रीत भाई तथा ब्र.कु. पवन भाई।

**बहादुरगढ़-** मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए एसडीएम भ्राता तरुण कुमार पवारिया को एक लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. अंजलि बहन, ब्र.कु. विनीता बहन तथा ब्र.कु रेनू बहन।

**चोमू (जयपुर)-** विधायक भ्राता रामलाल शर्मा तथा भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष भ्राता गजानंद कुमावत को 200 मास्क सौंपते हुए ब्र.कु. प्रेम बहन तथा ब्र.कु. मंगला बहन।

**महेसाना (गोडली पैलेस)-** यौगिक गृहवाटिका का शुभारंभ करते हुए वन संरक्षक भ्राता ए.सी. पटेल, नगरपालिका प्रमुख नवीन भाई परमार, ब्र.कु. सरला बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 10.00, Issue : July, 2020.

बेंगलुरु (सिटी सेंटर)- मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए, मुख्यमंत्री भ्राता येदुरप्पा को पाँच लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. पदमा बहन।

रायपुर- मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए जिलाधीश भ्राता भारतीदासन को ग्यारह लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. कमला बहन।

चंडीगढ़ (सेक्टर 33)- मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए अतिरिक्त उपायुक्त भ्राता सचिन राणा को पाँच लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. उत्तरा बहन।

हिसार- मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए विधायक भ्राता रणवीर सिंह गंगवा को पाँच लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. रमेश कुमारी बहन।

गुवाहाटी- मुख्यमंत्री कोरोना राहत कोष के लिए आसाम के मुख्यमंत्री भ्राता सर्बानंद सोनोवाल को दो लाख, पचास हजार रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. अल्पना बहन तथा अन्य।

गुलबर्गा- कोरोना राहत कोष के लिए उपायुक्त भ्राता शरत बी. को दो लाख रुपये का चेक सौंपते हुए ब्र.कु. विजया बहन।